thearyasamaj.org

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
- हमारे वीर विजयी हों

वर्ष : 29 अंक : 5, 25 अगस्त, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,111

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा ● 10 वर्षीय शुल्क 700 रु. ● वार्षिक शुल्क 70 रु. ● यह अंक 10 रु.

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

"आर्यसमाज और बलिदान" विशेषांक

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/-	अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/-
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/-	अन्दर का आधा (सादा)	2500/-
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/-	एक विज्ञापन पट्टी 250/- प्रति पृष्ठ, प्रति अंक	

thearyasamaj.org

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता– मनोहर लाल, प्रधान सम्पादक

1. जो मनुष्य जगत की जितनी भलाई करेगा उसको उतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा। (स्वामी दयानन्द)
2. आप अपनी सभी चिन्ताऐं परमापिता परमात्मा को समर्पण कर दें। वह ही सबसे उत्तम सहारा है, जो इस सत्य को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। (आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री)
3. यदि किसी कारणवश कभी कोई क्षण भगवद चिन्तन बिना बीत जाये तो उसके लिये पुत्रशोक से भी बढ़कर घोर पश्चाताप करना चाहिये, जिससे फिर कभी ऐसी भूल न हो।
4. अच्छा काम शीघ्रातिशीघ्र करो, उसे स्थगित न करो।
5. जिसपर भगवान को विशेष कृपा करनी होती है उसे वह अधिक लौकिक सुख नहीं देते। लौकिक सुख में विघ्न आये तो समझना चाहिये कि भगवान कोईआलौकिक सुख देने वाले हैं। इसीलिए विघ्न आया है। भगवान की साधारण कृपा जीव को अलौकिक सुख देती है।
6. सन्तोषी मनुष्य सदा सुखी रहता है।
7. उस जैसा दुःखी कोई नहीं, जो चाहता तो सब कुछ है, मगर परिश्रम कुछ भी नहीं करता।
8. क्रोध एक अग्नि है जो दूसरे को जलाने से पहले अपने को जला डालती है। क्रोध स्वास्थ्य का नाश करता है।
9. पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई खुशी उससे ज्यादा देर तक रह सकती है। (लेडी मौण्टेग्यु)
10. भय को टालो मत, सामने आने दो। उसका पेट चीरकर निकल जाने का इरादा रखो। (हरिभाऊ उपाध्याय)

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल, सोनीपत तथा जिला वेदप्रचार मण्डल, सोनीपत की ओर से वैदिक ज्ञान योग महाविद्यालय (गुरुकुल) ग्राम जुंआ (सोनीपत) में उदीयमान युवाओं के लिये 3 जून मंगलवार से 8 जून रविवार तक चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। गुरुकुल के आचार्य वेदनिष्ठ जी की व्यवस्था में इस शिविर में कक्षा 6 से 12वीं कक्षा आयु वर्ग के 85 विद्यार्थियों को हरिद्वार से स्वामी केवलानन्द जी द्वारा जहाँ योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया वहाँ आर्य वीर शिक्षक श्री जसवीर आर्य तथा रोहित आर्य द्वारा अनुशासन, नैतिक शिक्षा आसन, व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया गया। पूरे छः दिन तक आयोजित इस शिविर में दर्शानाचार्य आचार्य सन्दीप जी द्वारा अपनी विश्वगुरु वैदिक संस्कृति का ज्ञान भी दिया गया जिसके द्वारा आर्यवीर आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए इसकी उन्नति में भी अपना योगदान दें। आर्यवीरों की बल, बुद्धि की उन्नति के द्वारा उन्हं स्वावलम्बी बनने की प्रेरणाएं भी दी गई। अन्तिम दिन समापन के अवसर पर उदीयमान युवाओं ने व्यायाम, आसनों का प्रदर्शन भी किया।

– सुदर्शन आर्य, सचिव, आर्य वीर दल, सोनीपत

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

बलिदान

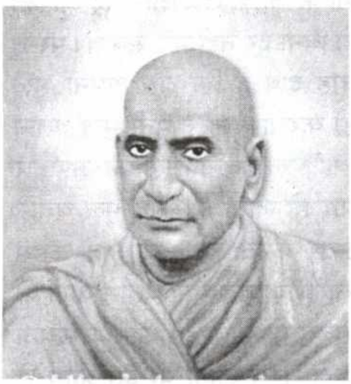

आर्य समाज शुरु से एक बलिदानी संस्था रही है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी स्वयं बलिदान पथ के पथिक बनकर, एक आदर्श- आर्यों के सामने प्रस्तुत किया था। उस समय जो भी त्यागी, तपस्वी- जिसके भी हृदय में धर्म, देश, जाति की थोड़ी-सी चिंगारी थी, वह ऋषि के संपर्क में आने से धधक उठी थी और वह दुःख तकलीफों को सहते हुए बलिदान पथ के राही बन गये थे। निडर, निर्भीक, तप, त्याग की जीवित मूर्तियाँ थी। आर्य उस समय थोड़े से होते हुए भी हर बुराई का सर्वनाश करने के लिए कमर कस के, सिर पर कफन बांध कर उठ खड़े हुए थे।

आज के आर्य वीरों, युवकों को इन बलिदानों से पुनः परिचित कराने के लिये आर्य समाजियों के बलिदानों की पहली किश्त प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है इससे आर्य वीरों में कुछ कर गुजरने की तमन्ना जागृत होगी।

यह सामग्री आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा छापी गई पुस्तक से ली गई है। यह पुस्तक 1961 में छपी थी। इसके लिये हम आभारी हैं।

– सम्पादक

thearyasamaj.org

आर्यसमाज और बलिदान!

आर्यसमाज एक धर्म-प्रचारक संस्था है। धर्म स्वभावतः मनुष्य में आत्म-त्याग की भावना को उत्पन्न करता है। धरती के सब मनुष्यों और अन्य सब प्राणियों को परमात्मा ने उत्पन्न किया है। परमात्मा हम सब का उत्पादक पिता औरमाता है। हम सब उस के पुत्र हैं। इस लिये हम सब आपस में भाई-भाई हैं। अपनी लौकिक माता के पेट से उत्पन्न होने वाले भाई को जिस प्रकार हम अपना भाई समझते हैं, उसे के सुख को जिस प्रकार अपना सुख और उस के दुःख को जिस प्रकार अपना दुःख समझते हैं उसी प्रकार हमें संसार के सब मनुष्यों और प्राणियों को उस जगजननी की सन्तान होने के कारण अपना भाई समझना चाहिये। और उन के सुख को अपना सुख और उन के दुःख को अपना दुःख समझना चाहिये। जिस प्रकार हम अपनी लौकिक माता से उत्पन्न अपने भाई के दुःखों को दूर करने और सुखों को बढ़ाने के लिये शक्ति भर प्रयत्न करते हैं उसी प्रकार उस जगजननी से उत्पन्न अपने भाईयों के दुःखों को दूर करने और उन के सुखों को बढ़ाने के लिये भी हमें सदा शक्ति भर यत्न करते रहना चाहिये। इसके लिये हमें जितना त्याग करने की आवश्यकता हो उसे करने के लिये सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। धर्म का अनुसरण स्वभावतः मनुष्य में इस प्रकार की भावनायें जागृत करता है और इन भावनाओं के अनुसार कार्य करने के लिये उसे प्रेरित करता है। धर्म का धर्मत्व इसी में है। किसी पुरुष के धार्मिक होने की यही वास्तविक कसौटी है।

आर्यसमाज वेद के धर्म का प्रचार करता है। वेद का धर्म वह शुद्ध और पूर्ण धर्म है जिसका जगदुत्पत्ति के आरम्भ में भगवान् ने मनुष्यों को उपदेश दिया था। इसलिये आर्यसमाज द्वारा प्रचारित इस शुद्ध धर्म में तो विश्वबन्धुत्व और आत्म-त्याग की इन भावनाओं को उत्पन्न होना और भी अधिक अनिवार्य है। फलतः वेद के धर्म का प्रचार करने वाले आर्यसमाज में ये भावनायें आरम्भ काल से उत्पन्न होती रही हैं और वह इन धार्मिक भावनाओं के अनुसार सदा शक्तिभर कार्य करता रहा है।

जब धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर कोई मनुष्य दूसरे लोगों के कल्याण के लिये अग्रसर होता है तो उस के लिये अपनी शक्ति और सामग्रीतयाग करना नितान्त आवश्यक होता है। अपने पदार्थों का त्याग किये बिना हम दूसरों का कल्याण और सुख साधन नहीं कर सकते। सभी प्रकार के त्यागों में हमें अपने स्वार्थ को, अपने सुख आराम को, छोड़ना होता है। सभी प्रकार के त्यागों में हमें अपने आत्मा की ममत्व-प्रधानता को दबाना होता है। इस प्रकार सब त्यागों की तह में आत्म त्याग की भावना काम करती है।

जब आत्म-त्याग की यह भावना इस सीमा तक बढ़ जाती है कि आवश्यकता होने पर हम अपने प्राणों तक का उत्सर्ग करने के लिये भी उद्यत हो जाते हैं तो इस पराकाष्ठा के आत्मत्याग को सामान्य भाषा में 'आत्माहुति' या 'बलिदान' कहते हैं।

जब तक अन्न, वस्त्र, धन, आदि स्थूल सामग्री द्वारा कष्टापन्न लोगों का दुःख दर्द दूर करके हम उन के सुख-साधन का प्रयत्न करते हैं तब तक 'बलिदान' की नौबत हमारी प्रायः नहीं आती है। परन्तु अनेक बार लोगों का वास्तविक सुखसाधन करने के लिये हमें उनके प्रचलित विचारों को बदल कर उन के स्थान में नये विचार देना आवश्यक होता है। लोगों के जो कष्ट अज्ञान पर आश्रित हैं वे अज्ञान को दूर किये बिना दूर नहीं कर सकते। परन्तु मनुष्य के स्वभाव में यह दोष है कि वह अपनी भूल सुझाया जाना पसन्द नहीं करता। वह अपनी भूल बताने वाले से चिढ़ जाता है। वह भूल बताने वाले का अपकार तक करने के लिये तैयार हो जाता है। यदि भूल बताने वाला अपना काम निरन्तर करता चला जाये तो उससे मनुष्य यहाँ क्रुद्ध हो जाता है कि वह भूल बताने वाले के प्राण तक लेने के लिये तत्पर हो जाता है। धार्मिक भावना से प्रेरित भूल बताने वाला पुरुष लोगों के इस क्रोध से घबराता नहीं है। उसने तो परमात्मा के पुत्रों का, अपने भाईयों का, दुःख-संकट दूर करना है। और वह अपने इन भाईयों का प्रचलित अज्ञान दूर करने से ही हो सकता है।

thearyasamaj.org

इस लिये वह अपनी सच्ची-खरी बातें निर्भीक भाव से सुनाता चला जाता है। यदि उस के ये नासमझ भाई क्रुद्ध होकर उसके प्राणों को ही ले लेना चाहते हैं तो वह इस के लिये भी उद्यत रहता है। अज्ञानान्धकार को हटा कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने के इस कार्य में वह हंसते-हंसते अपने आप को 'बलिदान' करने के लिये भी तैयार रहता है। ऐसी अवस्था में धार्मिक पुरुषों के लिये अपनी 'बलि' दे देने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं रहता है।

एक और प्रकार के अवसर भी हैं जब मनुष्य को 'बलिदान' होने के लिये तैयार रहना पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य और मनुष्य-समाज के कुछ जन्मसिद्ध अधिकार हैं। ये अधिकार छिन जाने पर न कोई मनुष्य वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी रहता है और न कोई मनुष्य-समाज ही मनुष्यों का समाज कहलाने का अधिकारी रह जाता है। बहुत बार स्वार्थी और शक्ति के मद में चूर लोग हमारे इन अधिकारों को कुचलने के लिये तत्पर हो जाते हैं। हमें इन लोगों से अपने अधिकारों की रक्षा करनी होती है। अपने अधिकारों की रक्षा के इस काम में हमें भारी से भारी आत्म-त्याग करने की आवश्यकता पड़ती है। धन-सम्पत्ति का तो कहना ही क्या, हमें प्राणों का मोह छोड़ कर ऐसे अवसरों पर अपने जीवनी का भी बलिदान करना पड़ता है। धार्मिक वृत्ति के पुरुष ऐसे अवसरों पर भी हंसते-हंसते अपना 'बलिदान' कर देते हैं।

वेद के धर्म का प्रचारक आर्यसमाज धार्मिक भावना से प्रेरित होकर प्रभु की सन्तानों का सुख-साधन करने के लिये तथा अपने जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा के लिये सदा सब प्रकार के भारी से भारी त्याग करता रहा है। आर्यसमाज के लोग आवश्यकता होने पर इन कामों में अपने प्राणों का बलिदान भी खेलते-खेलते करते रहे हैं। आर्यसमाजियों के लिये त्याग और बलिदान की राह पर चलना एक स्वाभाविक सी बात रही है। क्योंकि जिस वेद के धर्म का वे प्रचार करते हैं; वह वेद स्वयं पुकार-पुकार कर कहता है -

ये चित्पूर्व ऋतसाता ऋतजाता ऋतावृधः।
ऋषीन् तपस्वतो यम तपोजां अपि गच्छतात् स्वाहा।।
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः।
तपो ये चक्रिरे महस्तांशिचदेवापि गच्छतात् स्वाहा।।
ये युद्धयंते प्रधनेषु शूरासो ये तनुत्सजः।
ये वा सहस्रदक्षिणास्ताशिचदेवापि गच्छतात् स्वाहा।
।।अथर्व 18/2/15-17।।

अर्थात् जो तुम से पहले के सत्य का सेवन करने वाले, सत्य को बढ़ाने वाले, तपों को करने और तप से उत्पन्न होने वाले ऋषि लोग हैं, हे पुरुष! तू अपने आप को संयमी और आत्मजयी (यम) बनाकर उन ऋषियों की पंक्ति में जा।" "तप के कारण जिन्हें कोई दबा नहीं सकता है, तप द्वारा जिन्होंने आनन्द प्राप्त किया है, जिन्होंने तप को महिमाशाली बनाया है, हे पुरुष! तू उन लोगों की पंक्ति में जा।" "जो धर्म युद्धों में लड़ते हैं, जो शूरवीर अपने शरीरों का भी त्याग कर देते हैं और जो हज़ारों का दान करते हैं, हे पुरुष! तू उन लोगों की पंक्ति में जा।"

जो लोग त्याग और बलिदान की भावनाओं को उगाने वाले वेद के इन उदात्त उपदेशों को पढ़ेंगे और इन का प्रचार करेंगे उनके लिये भारी-से-भारी आत्मत्याग भी एक अति आसान सी बात है।

वेद ने तो प्रभु के उपासक के मुख से भी कहलवा दिया है :-

तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।।ऋग् 1/24/11।।

अर्थात्- "हे प्रभो! यह आप का उपासक यजमान अर्थात् यज्ञ का जीवन व्यतीत करने वाला होकर सब तरह की हवियों के दान द्वारा सब प्रकार के त्यागों और बलिदानों के द्वारा आप के दर्शनों की आशा रखता है।"

छोटे-बड़े सामान्य त्यागों के जीवन को मन्त्र में यज्ञ का जीवन कहा गया है और आत्माहुति या बलिदान के जीवन को 'हविदर्शन' का जीवन कहा गया है। हवि का शब्दार्थ तो त्याग ही होता है। यज्ञाग्नि में दी जाने वाली सामग्री की आहुतियों को हवि कहते हैं। यज्ञाग्नि की हवि कुण्ड में पड़ कर अपने आप को सर्वथा स्वाहा कर देती है। जिन लोगों के जीवन में यज्ञाग्नि को हवि जैसा चरम सीमा का त्याग आ जाता है, जो अपना सब कुछ स्वाहा करके अपने शरीरों की, अपने जीवनों की, भी आहुति दे देने के लिये उद्यत रहते हैं, उन के जीवन को हविदर्शन का जीवन कहा जाता है। जो लोग लोक-कल्याण और कर्त्तव्य-पालन के लिये अपने जीवनों तक की हवि देने के लिये तैयार रहते हैं, वेद कहता है, प्रभु के दर्शन भी उन्हीं आत्माओं को मिल सकते हैं।

thearyasamaj.org

जो लोग वेद के, बलिदान की भावनाओं से अनुप्राणित करने वाले इस प्रकार के उपदेशों का मनन करेंगे उनके लिये कौनसा त्याग और बलिदान हो सकता है जिसे वे बात ही बात में कर डालने के लिये उमगे नहीं रहेंगे?

श्रद्धा का महत्व

वैदिक धर्म में श्रद्धा का बड़ा महत्व है। ऋग्वेद के 17/151 सुक्त में उपदेश दिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को श्रद्धाशील होना चाहिये और "प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल' सब समय, श्रद्धा की वृत्ति अपने अन्दर स्थिर रखनी चाहिये" और उसके लिये भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिये। हमें श्रद्धाशील क्यों होना चाहिये? वेद इस का उत्तर देता है कि "श्रद्धा से ही अग्नि प्रज्वलित होती है और श्रद्धा प्रज्वलित होती है और श्रद्धा से ही हवि दी जाती है।" इसलिये हमें श्रद्धा की आवश्यकता है। अग्निहोत्र आदि यज्ञों में जो अग्नि प्रज्वलित की जाती है और उनमें जो घृत–सामग्री आदि हवियों की आहुति दी जाती है वह श्रद्धा पर ही निर्भर करती है। बिना श्रद्धा के यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकते। वेद में अग्नि का अर्थ संकल्प भी होता है। हम अपने जीवन में जो भी छोटे बड़े कार्य करना चाहते हैं उन्हें करने के हमारे जो संकल्प होते हैं, जो निश्चय होते हैं, उन को भी अग्नि कहा जाता है। और अपने इन विभिन्न प्रकार के कार्यों को चलाने और सफल बनाने के लिये हम उन में अपना जो, समय, सामान, धन और मस्तिष्क आदि लगाते हैं वह सब हवि कहा जाता है। हमारे वे विभिन्न प्रकार के कार्य करने के संकल्प पूरे नहीं हो सकते यदि हम उन कार्यों को करने के लिये अपने समय और धन आदि को निरन्तर उनमें न लगाते रहें। ये सब प्रकार की अग्नियां प्रज्वलित नहीं रह सकतीं और उनमें उन की हवियां नहीं दी जा सकतीं यदि हमारे अन्दर उनके लिये श्रद्धा न हो। श्रद्धा अपने कार्यों, उद्देश्यों और आदर्शों के प्रति पूर्ण विश्वास और निष्ठा की भावना को कहते हैं। श्रद्धावान् व्यक्ति ही विश्वास और निष्ठा वाला व्यक्ति ही, किसी कार्य को कर सकता और पूर्णता तक पहुँचा सकता है। यह श्रद्धा और निष्ठा की भावना ही, व्यक्ति में अपने कार्यों, संकल्पों, उद्देश्यों और आदर्शों के लिये सब प्रकार के त्याग करने की भावना को जागृत करती है। यह श्रद्धा और निष्ठा की भावना ही जब बढ़ते–बढ़ते पराकाष्ठा तक बढ़ जाती है तब व्यक्ति अपने कार्यों, संकल्पों, उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति के लिये अन्न, वस्त्र, धन और समय आदि के साधारण त्यागों का तो कहना ही क्या है, बड़े से बड़े आत्मत्याग करने के लिये भी उद्यत हो जाता है। तब वह अपने शरीर और प्राणों का भी बलिदान करने के लिये तैयार हो जाता है। तब वह अपने उद्देश्यों और आदर्शों की पूर्ति के लिये मृत्यु का भी हंसते–हंसते आलिंगन कर लेता है। आत्मत्याग आक्र बलिदान की भावना उग्र श्रद्धा की भावना का ही दूसरा नाम है। श्रद्धा, आत्मत्याग और बलिदान की भावना के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते। कोई महान् कार्य तो कर ही नहीं सकते। इसलिये वैदिक धर्म में व्यक्ति को श्रद्धाशील बनने का उपदेश दिया गया है और आदेश दिया गया है कि वह 'हविदर्शन' का, सब प्रकार के आत्मत्याग और बलिदान का, जीवन बिताने वाला बने।

इस प्रकार की उग्र श्रद्धा और आत्मत्याग तथा बलिदान की भावना से भरे हुए जीवन में बिजली का सा असर होता है। किसी के ऐसे जीवन को देख कर देखने वालों में बिजली सी दौड़ जाती है। वे उस के जीवन से प्रभावित हो जाते हैं। वे उस का अनुकरण करने लगते हैं। और उस की राह पर चलने को तैयार हो जाते हैं। स्वयं भी उसी की भांति बड़े से बड़ा आत्मत्याग और बलिदान करने को उद्यत हो जाते हैं। मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह किसी में कोई उदात्त बात देखता है, जब वह किसी में कोई ऊँची और श्रेष्ठ बात देखता है, जब वह किसी भी क्षेत्र में कोई कमाल की बात करते हुए किसी को देखता है, तो वह उससे चमत्कृत हो जाता है और स्वयं भी वैसा बनने की इच्छा करने लगता है। किसी श्रेष्ठ गायक का संगीत सुनकर हम सोचने लगते हैं कि हम भी वैसा ही गा सकते। किसी ऊंचे कवि की कविता सुन और पढ़ कर हम भी वैसी ही कविता कर सकते। किसी महान् खिलाड़ी के खेल देखकर हम सोचने लगते हैं कि हम भी वैसा ही खेल सकते। किसी उत्कृष्ट वक्ता को सुनकर हम सोचने लगते हैं कि हम भी वैसी ही वक्रृता दे सकते, किसी महान् विद्वान् और वैज्ञानिक को देखकर वैसा ही विद्वान् और वैज्ञानिक बनने की, किसी महान् दानी को देखकर वैसा ही दानी बनने की, और किसी महान् विजेता की कथा सुनकर

thearyasamaj.org

वैसा ही महान् विजेता बनने की इच्छा हमारे भीतर उत्पन्न होने लगती है। जब हम अर्जुन, कर्ण, प्रताप, शिवाजी और नैपोलियन जैसे वीरों की कथाएं पढ़ते हैं तो हमारे अन्दर वैसा ही वीर बनने की भावना जागती है। देशभक्त लोगों की कथायें पढ़कर हम भी देशभक्त बनना चाहते हैं। धर्म पर न्यौछावर होने वाले हकीकत राय जैसे आत्मत्यागियों के जीवन वृत्तान्त सुन और पढ़कर हम भी अपने आप को धर्म पर न्यौछावर कर देनेवाला बनने की इच्छा करने लगते हैं। किसी उत्कृष्ट तपस्वी, साधु-सन्त और महात्मा को देखकर हमारी भी इच्छा होने लगती है कि हम भी वैसा ही बन सकते। श्रेष्ठता, उदात्तता, कौशल और प्रवीणता में जादू कर देने की शक्ति होती है। चाहे यह श्रेष्ठता और प्रवीणता किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो। हम उससे अभिभूत होते हैं और हमारे अन्दर वैसा ही बनने की उत्कण्ठा और तरंग उत्पन्न होने लगती है। श्रेष्ठ और ऊँचे लोगों को देखकर हम भी श्रेष्ठ और ऊँचा बनना चाहते हैं।

समाजों, जातियों और राष्ट्रों की उन्नति के लिये उन के सदस्यों का श्रेष्ठ और ऊँचा होना नितान्त आवश्यक है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह जो कुछ भी बनता है अपने समाज के सदस्यों के अनुकरण और सहयोग से ही बनता है। किसी समाज और राष्ट्र के सदस्य अच्छे होंगे तो वह स्वयं सामूहिक रूप से भी अच्छा होगा। व्यक्ति अनुकरण से अच्छे बना करते हैं। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने स्थान पर श्रेष्ठ और ऊँचा बनने का प्रयत्न करना चाहिये जिस से उस के उदाहरण से समाज के दूसरे सदस्य श्रेष्ठ और ऊँचे बनते रह सकें और उसे स्वयं अपने से श्रेष्ठ दूसरे लोगों का अनुकरण करके अपने आप को और अधिक श्रेष्ठ ऊँचा बनाते रहना चाहिये। यह क्रम समाज और राष्ट्र के व्यक्तियों में निरन्तर चलते रहना चाहिये। इसीलिये वैदिकधर्म का आदेश है कि प्रत्येक मनुष्य को श्रद्धावान बनना चाहिये, अपने कार्यों, संकल्पों, उद्देश्यों और आदर्शों में पूर्ण विश्वास और निष्ठा रखने वाला बनना चाहिये। उसे 'हविदर्शन' का जीवन बिताना चाहिये, उसे अपने कार्यों, संकल्पों, उद्देश्यों और आदर्शों की सिद्धि के लिये सब प्रकार के त्याग, सब प्रकार के बलिदान करने के लिये भी उद्यत रहना चाहिये। आवश्यकता होने पर उसे अपने प्राणों की आहुति देने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये। जिस समाज के व्यक्तियों में श्रद्धा और निष्ठा की, यह आत्मत्याग और बलिदान की भावना भरी रहेगी, वह सदा सफलता और उन्नति के मार्ग पर चलता रहेगा। उसे सदा प्रत्येक क्षेत्र में विजय ही विजय मिलेगी।

आर्यसमाज के प्रवर्तक और वैदिकधर्म के महान् प्रचारक महर्षि दयानन्द का जीवन वेद की उच्च उदात्त शिक्षाओं से अनुप्राणित था। वेद की इन शिक्षाओं तथा महर्षि दयानन्द के आदर्शों और जीवन से अनुप्राणित होकर आर्यसमाज सदा अपने सिद्धान्तों और आदर्शों की रक्षा के लिये बड़े से बड़े बलिदान देने के लिये सन्नद्ध रहा है। इसीलिये तो वेद के धर्म का प्रचार करने वाले आर्यसमाज के इतिहास का एक-एक पृष्ठ भारी से भारी त्याग और बलिदान की कथाओं से भरा पड़ा है। आर्यसमाज के भारी त्यागों और महान् बलिदानों की कहानी विस्तार से कहने के लिये हमारे पास स्थान नहीं है। अगले थोड़े से पृष्ठों में हम आर्यसमाज के इतिहास के इस पहलू का बहुत संक्षिप्त वर्णन पाठकों के आगे उपस्थित करते हैं।

आर्यसमाज और लोक कल्याण

आर्यसमाज द्वारा दिये गये जीवनों के बलिदानों की चर्चा करने से पहले समय-समय परलोक-कल्याण के लिये आर्यसमाज जो भारी त्याग करता रहा है उन में से कुछ की ओर निर्देश कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। ऐसा करने से आर्यसमाज की बलिदान भावना का वास्तविक स्वरूप समझने में बहुत सहायता मिलेगी, इससे हमें आर्यसमाज के बलिदानों की तह में छिपी हुई मौलिक प्रेरणा का समझना सुगम हो जायेगा।

हमने ऊपर कहा है कि धार्मिक भावना स्वभावतः धार्मिक पुरुषां के भीतर प्राणिमात्र के दुःख दर्द में समवेदना के भाव उत्पन्न करती है। इसी लिये हम देखते हैं कि जब कभी मनुष्य समाज के किसी अंश पर कोई विपत्ति आई है तो आर्यसमाज उसी समय पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिये आगे बढ़ा है। ऐसे अवसरों पर आर्यसमाज सदा कष्टापन्न लोगों की सेवा करने के लिये उनके पास अपने स्वयं सेवकों की सेनायें भेजता रहा है और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये मुक्तहस्त से धन की सहायता देता रहा है। आर्यसमाज का जीवन अभी

thearyasamaj.org

छोटा ही है। आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द ने सन् 1875 में कीथी। अपने जीवन के इन 87 सालों में आर्यसमाज से कष्टापन्न जन-समाज की सेवा का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया है। सन् 1896-98 और 1899-1900 में हमारे देश में भयंकर अकाल पड़े थे। अन्न न मिलने से अनगिनत आदमियों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े थे। असंख्य बसे हुए घर उजड़ गये थे। भूख से विह्वल होने के कारण पति को पत्नी की और माता को सन्तान की सुध न रही थी। सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गई थी। आर्यसमाज अभी अपने आरम्भिक काल में ही था। उसकी शक्ति का अभी बहुत विकास नहीं हुआ था। फिर भी आर्यसमाज ने अकाल से आक्रान्त प्रदेशों में अपने सेवक भेजे, पीड़ित लोगों को अन्न, वस्त्र और धन की शक्ति पर सहायता दी। सैकड़ों अनाथ बच्चों की रक्षा की और असहाय अबलाओं की लज्जा को ढका। हज़ारों रुपया इस काम में आर्यसमाज ने खर्च किया। उस समय पीड़ितों की सहायता करने वाला एक मात्र भारतीय समाज आर्यसमाज था। सन् 1908 के अकाल में भी आर्यसमाज ने इसी प्रकार हज़ारों रुपया व्यय करके पीड़ितों की सहायता की।

कांगड़ा की घाटी में सन् 1904 में एक भयंकर भूकम्प आया था। भूकम्प से जन और धन की घोर हानि हुई थी। हज़ारों आदमी निराश्रय और बे-घर बार के हो गये थे। उस समय भी आर्यसमाज सब से पहले पीड़ित लोगों की सहायता और सेवा करने के लिये पहुँचा था।

सन् 1918 में गढ़वाल के प्रदेश में भीषण अकाल पड़ाथा। एक भीष्ण अकाल में जनता की जो दुःखपूर्ण शोचनीय स्थिति हो जाया करती है वही स्थिति गढ़वाल के लोगों की हो गई थी। लोगों को खाने, पहनने को नहीं मिलता था। सर्वत्र हाहाकार मच गया था। उस समय भी आर्यसमाज दुःखाकुल जनता की सेवा के लिये तत्काल आक्रान्त प्रदेश में पहुँचा। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने वहाँ जाकर डेरे लगा लिये। उन के नेतृत्व में गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारी और स्नातक तथा अन्य आर्यसमाजी लोग आक्रान्त प्रदेश के गांव-गांव में घूमकर पीड़ित लोगों में अन्न, वस्त्र और औषधियाँ बांटने गये। और भी जिस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती पीड़ित लोगों को वह सब दी जाती। इस काम में अकेले स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के द्वारा आर्यसमाज ने 70330/- रु. व्यय किये थे। महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में वहाँ अलग काम हो रहा था। उनके द्वारा जो हज़ारों रुपया व्यय हुआ वह अलग है।

जून 1934 में बिहार में भयंकर भूकम्प आया। नगरों के नगर नष्ट भ्रष्ट हो गये। इस दुर्दैव का यहाँ वर्णन हो सकना कठिन है। आर्यसमाज के लोग इस समय भी विपद्-प्रस्त जनता की सेवा के लिये दौड़कर पहुँचे। लोगों की सब प्रकार की सहायता की गई। भूखों और नंगों को अन्न और वस्त्र दिये गये। बे-घर बारों के लिये निवासार्थ झोंपड़े बनवाये गये। अकेली आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस काम में कोई 10,000/- व्यय किये थे। अन्य प्रांतों की समाजों औरसभाओं ने जो विपुल खर्च किया था वह अलग है।

पुनः 1935 में क्वेटा में भीषण भूकमप आया। सारा क्वेटा विनष्ट हो गया। हज़ारों लोग दब कर मर गये। सब की चल और अचल सम्पत्ति नष्ट हो गई। आर्यसमाज इस समय भी विपदाक्रान्त लोगों की सहायता और सेवा के लिये तत्काल पहुँचा। जिन को अन्न की जरूरत थी उन्हें अन्न दिया गया। जिन्हें दवा-दारू और मरहम-पट्टी की आवश्यकताथी उन्हें वह दी गई। जिन्हें रुपये की आवश्यकता थी उन्हें वह दिया गया। जिन्हें देश में अपने घरों में पहुँचाने की आवश्यकता थी उन्हें वहाँ पहुँचाने का प्रबन्ध किया गया। इस कार्य में भी आर्यसमाज ने हज़ारों रुपया खर्च किया। अकेले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने ही कोई 19,000/- खर्च किया। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा आदि संस्थाओं द्वारा व्यय की गई विपुल राशि अलग है।

सन् 1942 में सिन्ध नदी के चढ़ जाने से सिन्ध प्रान्त में भयंकर बाढ़ आई। गांव के गांव पानी में दब गये और बह गये। हज़ारों आदमी बे घरबार के और अन्न, वस्त्र से विहीन हो गये। मलेरिया भयंकर रूप से फूट पड़ा। इस विपत्ति के समय भी आर्य समाज झट पीड़ित लोगों की सहायता के लिये वहाँ पहुँचा। लोगों को हज़ारों रुपये के वस्त्र और दवाइयाँ वितरण की गईं। चिकित्सा के लिये केन्द्र स्थापित किये गये। अन्य सब प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति की गई। इस अवसर पर भी आर्यसमाज ने हज़ारों रुपया खर्च किया। अकेले आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने ही, इस समय कोई 23,000 रु. खर्च किया। अन्य सभाओं

thearyasamaj.org

और समाजों ने जो भारी व्यय किया वह अलग है।

सेवा के इन सब अवसरों पर आर्यसमाज जाति और सम्प्रदाय के भेदभाव को भुला कर कष्टापन्न मात्र की सहायता और सेवा करता रहा है। सिन्ध प्रान्त में तो सब काम प्रधानतः हुआ ही मुस्लिम प्रधान प्रदेशों में था।

जनता की सेवा के अन्य अवसरों पर भी आर्यसमाज ने भारी काम किया है। उदाहरण के लिये 1932 में जम्मू प्रदेश में वहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अवांछनीय अत्याचार किये थे। प्राणों की हत्या, माल असबाब की लूट, स्त्रियों और बच्चों पर बलात्कार आदि कोई ऐसी पशुता न थी जो उन उपद्रवों में हिन्दुओं पर न की गई हो। पीड़ितों की संख्या हज़ारों तक पहुँच गई थी। इस संकट से बचने का उपाय एकमात्र इस्लाम को स्वीकार कर लेना था। इस घोर विपत्ति के समय भी आर्यसमाज पीड़ितों की सहायता के लिये तत्काल वहाँ पहुँचा। स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में दयानन्द उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी और अध्यापक तथा अन्य आर्यसमाजी पुरुष इस निर्दयता के क्षेत्र में जा पहुँचे। पीड़ितों की अन्न, वस्त्र द्वारा सहायता की गई। जो लोग डर कर अपने धर्म से गिर गये थे उन्हें वापिस अपने धर्म में लाया गया।

दक्षिण भारत के मालाबार प्रान्त में मोपला मुसलमानों के प्रसिद्ध मोपला काण्ड के समय भी वहाँ के हिन्दुओं पर इसी प्रकार के अत्याचार किये थे। उस समय भी आर्यसमाजियों ने वहाँ पहुँच कर पीड़ितों की भरपूर सहायता की थी।

सन् 1942–43 में बंगाल प्रान्त में भयंकर अकाल पड़ा था। यह अकाल अभूतपूर्व था। प्राकृतिक और मानवीय दोनों ही प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियाँ इस विकट अकाल का कारण थीं। जहाँ प्राकृतिक करणों से उस प्रान्त में अन्न नहीं उपजा था वहाँ तात्कालिक ब्रिटिश सरकार की कुव्यवस्था के कारण अन्य स्थानों से भी पर्याप्त अन्न नहीं पहुँचाया जा सका था। फलतः वहाँ विकराल अकाल पड़ा और लाखों नर–नारी मौत के घर पहुंच गये। लोगों का तो कहना है कि उस अकाल में कम

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

thearyasamaj.org

से कम 50 पचास लाख लोगों की मृत्यु हुई। अकाल से 30 लाख मनुष्यों की मृत्यु हुई थी। यह तो उस समय की सरकार ने भी स्वीकार किया था। इस अकाल के समय भी सैकड़ों आर्य-सेवक जनता की सेवा के लिये वहाँ पहुँचे थे और बिना हिन्दू और मुसलमान का भेद किये पीड़ित जनता में अन्न, वस्त्र और औषधियां बांटी थी। वहाँ की जनता में मुसलमानों की संख्या अधिक होने के कारण मुसलमानों को यह सहायता अधिक मात्रा में प्राप्त हुई थी। इस सेवा कार्य में भी आर्यसमाज ने हज़ारों रुपये की राशि व्यय की थी।

सन् 1946-47 में पूर्वी बंगाल के नोआखाली प्रदेशों में वहाँ के मुसलमानों ने वहाँ के हिन्दू निवासियों पर बड़े क्रूर अतयाचार किये थे। मुसलमानों ने ये अत्याचार भी जिन्ना के नेतृत्व में तात्कालिक मुस्लिम लीग के भड़काने से पाकिस्तान बनाने की मांग पर आधारित राजनैतिक कारणों से किये थे। कोई नृशंस कर्म नहीं था जोकि मुसलमानों ने न किया हो। लोगों के घर जला दिये गये। धन-सम्पत्ति लूट ली गई। सैकड़ों आदमियों को मार डाला गया। नन्हें-नन्हें बच्चों तक को कत्ल कर दिया गया। जबरदस्ती लोगों को मुसलमान बनाया गया और महिलाओं का चरित्र भ्रष्ट किया गया। सारे प्रदेश में त्राहि-त्राहि मच उठी। मुस्लिम धर्मान्धता का नंगा रूप उस समय देखा गया। उस विकट समय में भी सार्वदेशिक और प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभाओं के तत्वावधान में आर्यसमाज के सैंकड़ों सेवक वहाँ पहुँचे थे और आर्यसमाज ने पानी की तरह रुपया बहा कर पीड़ित लोगों की भांति-भांति की सेवा की थी और उन्हें आश्वस्त किया था। तथा बलात् विधर्मी बनाये गये लोगों को पुनः अपने धर्म में वापिस लाया गया था।

सन् 1924-25 में भी देश में मुसलमानों द्वारा आयोजित दंगों की लहर चली थी। देश के कोहाट, बन्नू, पेशावर, रावलपिण्डी, मुलतान, सहारनपुर और कानपुर आदि अनेक नगरों में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर नृशंस और कायरतापूर्ण अत्याचार किये थे। हिन्दुओं के धर्ममन्दिर जला दिये गये और अपवित्र कर दिये गये थे। उन के घरों में आग लगा दी गई थी। स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया गया था और छातियां तक काट डाली गई थीं। बूढ़े और बच्चे का भेद किये बिना अनगिनत लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था। नृशंसता जिन अत्याचारों की कल्पना कर सकती है वे सब मुस्लिम गुण्डों द्वारा हिन्दुओं पर किये गये थे। इन संकट के समयों में भी आर्यसमाज के सेवक विपद्ग्रस्त लोगों के पास पहुँचे थे और उन की तरह-तरह से सेवा की थी और इस कार्य में भी आर्यसमाज ने मुक्तहस्त होकर रुपया खर्च किया था।

इन सब अवसरों पर आर्यसमाज ने लाखों की संख्या में रुपया खर्च किया है। जब जब जनता पर किसी प्रकार की कोई विपत्ति आई है तब तब आर्यसमाज विपद्ग्रस्त लोगों की सेवा के लिये इसी प्रकार आत्मत्याग करता रहा है। स्थानाभाव से यहाँ अधिक उदाहरण नहीं बढ़ाये जा सकते।

आर्य समाज और शिक्षा

आर्य समाज की त्यागमयी भावना का परिचय देने के लिये उस के एक अन्य क्षेत्र में किये हुए कार्य की ओर भी संकेत कर देना उचित प्रतीत होता है। वह क्षेत्र है शिक्षा का। जनसमाज का अज्ञानान्धकार दूर करना आर्यसमाज का एक प्रधान उद्देश्य है। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियमों वा उद्देश्यों में से एक नियम ही यह रखा है कि "अविद्या का नाश और विद्या की उन्नति करनी चाहिये।" शिक्षा के बिना लोगों का वास्तविक कल्याण नहीं हो सकता। इस लिये शिक्षा का काम अपने प्रारम्भ काल से ही आर्यसमाज ने अपने हाथ में ले रखा है। इस लोक-कल्याण के काम में आर्यसमाज बेहद शक्ति खर्च कर रहा है। इस काम में आर्यसमाज पानी की तरह अपना रुपया बहा रहा है।

(टिप्पणी : यह संख्या सन् 1962 की है।) इस समय आर्यसमाज के कोई 32 गुरुकुल चल रहे हैं। इन में से अकेले गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक खर्च 8,00,000 रु. है। गुरुकुल वृन्दावन का वार्षिक खर्च 1,00,000 रु. है। गुरुकुल कांगड़ी की शाखाओं में से कईयों का वार्षिक व्यय एक-एक लाख रुपया है। उस की शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिक खर्च 90863 रु. है। गुरुकुल झज्जर का 80,000 रु. है। गुरुकुल भैंसवाल का 80,500 रु. वार्षिक है। आर्यसमाज के 5 कन्या गुरुकुल चलरहे हैं। इन में से गुरुकुल कांगड़ी की शाखा कन्या गुरुकुल

thearyasamaj.org

देहरादून का वार्षिक व्यय 2,00,000 रु. है। कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) का वार्षिक व्यय 48,000 रु. है। कन्या गुरुकुल बड़ौदा का वार्षिक व्यय 1,25,000 रु.। हिसाब लगाया जाये तो सब गुरुकुलों पर मिलाकर आर्यसमाज प्रतिवर्ष कोई 25–30 लाख रुपये खर्च कर रहा है। आर्यसमाज के 3 उपदेशक विद्यालय हैं, इन में से अकेले दयानन्द उपदेशक विद्यालय भटिण्डा पर प्रतिवर्ष 11,000 रु. व्यय होता है। आर्यसमाज के दो दर्जन कालेज और कोई 90 हाई स्कूल और इण्टरकालेज चल रहे हैं। उदाहरण के लिये आर्य कालेज लुधियाना का वार्षिक व्यय 1,61,000 रु. दयानन्द मथुरादास कालेज मोगा का 1,75,000 रु., डी.ए.वी. कालेज अम्बाला का 2,90,000 रु. और डी.ए.वी. कालेज रुड़की का 68,000 रु. हैं डी. ए.वी. कालेज जालन्धर का 6,00,000 रु. वार्षिक, डी.ए. वी. कालेज शोलापुर का 6,95,191 रु. वार्षिक आर्य कालेज पानीपत का 1,26,384 रु. वार्षिक और कन्या महाविद्यालय जालंधर का 1,70,000 रु. वार्षिक व्यय है। दयानन्द कालेज अजमेर का वार्षिक खर्च 4,00,000 रु. है। कुल मिलाकर इन कालेजों और स्कूलों पर आर्यसमाज प्रतिवर्ष कोई दो करोड़ रुपया खर्च कर रहा है। इतना ही नहीं आर्य समाज की और कोई 300 कन्या पाठशालायें तथा 8–10 वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम चल रहे हैं। आर्यसमाज के कोई 50 अनाथालय और 40 विध्वाश्रम चल रहे हैं। औरक ोई 2 दर्जन धर्मार्थ औषधालय चला रखे हैं। इन सब संस्थाओं पर भी प्रतिवर्ष लाखों रुपया खर्च होता है। आर्यसमाज की उपयुक्त सब संस्थाओं में मिलाकर लाखों बालक और बालिकायें शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इन सब गुरुकुलों, विद्यालयों, कालेजों, स्कूलों और पाठशालाओं पर आर्यसमाज प्रतिवर्ष कोई 2–3 करोड़ रुपया खर्च कर रहा है।

आर्यसमाज संख्या की दृष्टि से भारतवर्ष की 44 करोड़ जनता में कोई विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखता है। 1939 की जनगणना में आर्य समाजियों की जनसंख्या केवल 990233 था। अब उनकी संख्या 50–60 लाख होगी। यह संख्या बिल्कुल नगण्य है। इतने थोड़े आर्यसमाजी शिक्षा के क्षेत्र में इतना अधिक रुपया बहा रहे हैं। आर्यसमाज

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामयाः

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग–अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

– चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

thearyasamaj.org

का लोककल्याण की वहनीय भावना से किया हुआ यह त्याग सचमुच अद्भुत है। यह भावना ही बढ़ते-बढ़ते जीवन-बलिदान का रूप धारण कर लेती है। आर्यसमाज द्वारा किये गये और किये जा रहे पार्थिव पदार्थों के बलिदान की ओर संकेत करके अब हम उसके जीवन-बलिदानों की कथा संक्षेप से पाठकों के सम्मुख उपस्थित करते हैं।

प्रथम बलिदान

आर्यसमाज का सब से पहला बलिदान उस के संस्थापक स्वयं ऋषि दयानन्द का है। मानव-समाज के कल्याण की भावना से प्रेरित होकर ऋषि दयानन्द ने सत्य का चक्र हाथ में लिया था। उन के सत्य के प्रचार के आगे असत्य, अधर्म, झूठ और पाखण्ड के दुर्ग धड़ाधड़ गिरने लगे। उन द्वारा की हुई सत्य की गर्जना का दुर्बल और तुच्छ हृदय वाले लोग सहन न कर सके। अनेक लोग उन के शत्रु होकर उनके प्राणों के प्यासे हो गये। अनेक बार ऋषि को मारने के प्रयत्न किये। न जाने कितनी बार ऋषि शस्त्रों के प्रहार से बाल-बाल बचे और न जाने कितनी बार ब्रह्मचर्य और तपस्या से बलिष्ठ उन के शरीर ने दिये गये हलाहल विष को हज्म किया। ऋषि सत्य का नाद बजाते-बजाते जोधपुर पहुँचे। राजमहलों में भी प्रचार हुआ। एक दिन ज्यों ही ऋषि उपदेश के लिये महलों में पहुँचे त्यां ही महाराज के पास से निकल कर जा रही नन्हीजान नामक वेश्या पर ऋषि की दृष्टि पड़ी! ऋषि ने तमक कर महाराजा को कहा, "सिंह कुतिया के साथ नहीं रहा करते, क्षत्रिय को वेश्या के साथ नहीं रहना चाहिये।" वेश्या ने ऋषि का यह वाक्य सुन लिया। वह क्रुद्ध हो गई। ऋषि के प्रचार से अनेक लोग पहले ही क्रुद्ध थे। वेश्या ने षड्यन्त्र करके ऋषि को विष दिलवा दिया। इस बार के विष को ऋषि का शरीर न पचा सका। योग क्रियाओं से भी वे विष को बाहर न कर सके। उन के रोम-रोम में असह्य यन्त्रणा देने वाले फोड़े निकल आये। ऋषि असीम धैर्य से इस असह्य पीड़ा को सहते रहे। योग्य डाक्टरों से इलाज कराया गया पर कोई लाभ न हुआ। अन्त में 30 अक्टूबर 1883 की दीवाली की रात को "प्रभो! तूने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो" इन शब्दों के साथ हंसते-हंसते योग की विधि से समाधिस्थ होकर ऋषि ने अपने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया और ब्रह्म में लीन हो गये।

बलिदानों की परम्परा

ऋषि दयानन्द के बलिदान के पश्चात् आर्यसमाज के बलिदानों में धर्मवीर पं. लेखराम जी का बलिदान बहुत ऊँचा स्थान रखता है। ऋषि दयानन्द के दर्शन और उपदेश से पं. लेखराम में धर्मप्रचार की भावना प्रबल वेग से जाग उठी थी। वे अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर आर्यसमाज के उपदेशक बनकर धर्म-प्रचार के मैदान में उतर आये थे। उन के प्रचार में अद्भुत जादू होता था। जहाँ जाते थे धाक जम जाती थी। आप अरबी और फारसी के विशेष विद्वान् थे। इस से आप के प्रचार में मुसलमान भाइयों के अज्ञान और भूलों को विशेष रूप से दिखाया जाता था। उन के प्रचार से अनेक लोग इस्लाम छोड़कर शुद्ध होकर वैदिक धर्म ग्रहण कर लेते थे। इससे मुसलमानों के कुछ साम्प्रदायिक लोग पंडित जी से क्रुद्ध रहने लगे। एक दिन एक छद्म-वेषी मुसलमान युवक उन के पास आया। वह कहने लगा कि मैं आप के पास रहकर वैदिकधर्म का स्वाध्याय करना चाहता हूँ और इस्लाम छोड़कर आर्य बनना चाहता हूँ, पंडित जी को और क्या चाहिये था। उस युवक को अपने पास रख लिया। हितैषियों ने युवक की चाल-ढाल देखकर पंडित जी को सावधान भी किया। पर धर्म के मतवाले पंडित जी किसी की न सुनते थे। उन दिनों पंडित जी ऋषि दयानन्द के जीवन को लिखने का काम कर रहे थे। 6 मार्च सन् 1897 की सायंकाल को पंडित जी लिखने का कार्य समाप्त करके उठे। उन्होंने अंगड़ाई ली। उसी समय मौका पाकर उस नराधम युवक ने पंडित जी के पेट में छुरा घोंपकर उसे चारों ओर घुमाकर उन की अन्तड़ियों को चाक-चाक कर दिया। पंडित जी ने असीम धैर्य दिखाया। उन्हें अस्पताल में ले जाया गया। पर कोई लाभ न हुआ। उसी रात को उन का देहान्त हो गया। उनके मृत मुख-मण्डल पर भी अद्भुत शान्ति और कान्ति विराज रही थी।

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान

आर्यसमाज के बलिदानों में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान विशेष स्थान रखता है। पंडित जी की भांति ही ऋषि दयानन्द के दर्शनों और उपदेशों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन में भी क्रान्ति मचा दी थी। वे वैदिक धर्म के दीवाने हो गये थे। आप का प्रारम्भिक नाम ला. मुंशीराम था। आप जालन्धर के प्रसिद्ध वकील थे। वकालत के काम से जो समय बचता था उसे आप वैदिकधर्म के प्रचार में लगाया करते थे। आप व्याख्यान भी दिया करते थे और शास्त्रार्थ भी करते थे। इसके अतिरिक्त सद्धर्मप्रचारक नाम का साप्ताहिक पत्र भी निकाला करते थे। इस पत्र के लेखों से धर्म की गंगा बहा करती थी। थोड़े ही समय में आप आर्यसमाज के अद्वितीय नेता बन गये। फिर आपने वकालत पर भी लात मार दी और सारा समय आर्यसमाज के प्रचार में देने लगे। लोग आप के नाम और चरित्र को देखकर आप को महात्मा मुंशीराम कहने लगे। 4 मार्च 1902 को आपने हरिद्वार में प्रसिद्ध विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल की स्थापना शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत बात थी। इस से आप का नाम देश-विदेश में प्रसिद्ध हो गया। गुरुकुल के आचार्य के रूप में आप की अद्भुत आभा थी। कई योरोपियन यात्रियों ने इस समय आप की ईसामसीह से तुलना की। गुरुकुल की स्थापना के समय आपने त्याग की पराकाष्ठा कर दी थी। आपने अपनी सारी सम्पत्ति गुरुकुल को अपने जीवन के साथ ही दान कर दी थी। देर तक गुरुकुल की सेवा करने के पश्चात् आपने संन्यास ले लिया। तब से आप स्वामी श्रद्धानन्द कहलाने लगे। आप की सेवाओं का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया था। कुछ समय आपने कांग्रेस के साथ राजनैतिक क्षेत्र में भी भारी काम किया था। 1919 में रौलट एक्ट के आन्दोलन के दिनों में आपने अद्भुत कार्य किया था। 30 मार्च 1919 के दिन आप के नेतृत्व में देहली में की जा रही सभा पर जब सरकारी सैनिक गोलियां चलाने आये थे तो आप छाती तानकर उन के आगे खड़े हो गये थे और कह दिया था कि "लो मेरी छाती खुली है, चला लो गोलियां।" उस समय हिन्दू और मुसलमानों में गहरी एकता थी। उस समय की स्वामी जी की देश की सेवाओं से मुसलमान भी बहुत प्रसन्न हुए थे। 4 अप्रैल 1919 को स्वामी जी का दिल्ली की सुप्रसिद्ध जामा मस्जिद की वेदि से धर्मोपदेश हुआ था। इस्लाम के इतिहास में शायद यह एकमात्र घटना है जब कि किसी गैरमुस्लिम ने किसी मस्जिद की वेदि से धर्मोपदेश दिया हो। 1919 की अमृतसर में होने वाली कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष आप ही बने थे। इस के अनन्तर आपने अछूतोद्वार के सम्बन्ध में विशेष आन्दोलन चलाया था और इसके लिये सारे भारत की यात्रा की थी। हिन्दूमहासभा के संगठन और आन्दोलन को भी आपने भारी बल दिया था। अन्तिम दिनों में आप को धर्मान्ध मुसलमानों से हिन्दुओं की रक्षा के लिये शुद्धि के आन्दोलन को विशेष रूप से अपने हाथ में लेने की आवश्यकता प्रतीत हुई थी। इस आन्दोलन को आपने सारे भारतवर्ष का विषय बना दिया था। धर्मान्ध मुसलमानों की आंख में स्वामी श्रद्धानन्द कांटे की तरह खटकने लगे। उन्होंने उन्हें मार्ग से दूर कर देने का निश्चय कर लिया। 1926 के दिसम्बर में स्वामी जी निमोनिया से रोगी होकर उठे थे। उस वृद्धावस्था के रोग के कारण शरीर अभी बहुत दुर्बल था। 23 दिसम्बर की शाम को अब्दुल रशीद नाम का एक मुसलमान स्वामी जी के स्थान पर आया। आकर कहने लगा कि मैंने स्वामी जी से धर्म के सम्बन्ध में कुछ बातें करनी हैं। स्वामी जी के सेवकों ने आपकी दुर्बलता को देखकर उसे वापिस भेजना चाहा। स्वामी जी ने अपने कमरे में यह बातचीत सुन ली। उन्होंने अब्दुलरशीद को अपने पास बुला लिया। उसने पानी मांगा। स्वामी जी ने उसे पानी पिलवाया। पानी पीते ही उसने स्वामी जी की छाती पर पिस्तौल से गोलियां दाग दीं। तत्काल उन का आत्मा नश्वर शरीर को छोड़कर उड़ गया। अब्दुलरशीद को पानी पिलवाने और उस की धर्म जिज्ञासा को शान्त करने की भावना से स्वामी जी के चेहरे पर जो कृपा, सन्तोष और शान्ति की मुस्कराहट पूर्ण मुद्रा आ विराजी थी। वह उन के मृत मुखमण्डल पर भी उसी प्रकार विराज रही थी।

महाशय राजपाल

आर्यसाहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक और विक्रेता लाहौर निवासी महाशय राजपाल जी का नाम भी इस प्रसंग में अनायास याद हो जाता है। आर्यसमाज के बलिदानों की

thearyasamaj.org

परम्परा में उन का बलिदान भी एक निराला स्थान रखता है। बाल्यकाल से ही महाशय राजपाल जी को आर्यसमाज के सिद्धान्तों में दृढ़ आस्था और उस के कामों में गहरी रुचि थी। वे जहाँ भी और जिस भी स्थिति में रहे, आर्यसमाज की सेवा शक्तिभर करते रहे। इस के लिये वे अपने समय और धन का दान निःसंकोच भाव से करते रहे। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रसार अधिक से अधिक हो और उन का सन्देश घर-घर में पहुँचे, यह भावना महाशय राजपाल जी में बड़ी प्रबल थी। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने आर्यसमाजिक साहित्य के प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया और अपनी सारी शक्ति इस काम में लगा दी। "सरस्वती-आश्रम और आर्यपुस्तकालय" नामक उन के प्रकाशनमन्दिर ने आर्यसाहित्य के निर्माण और प्रकाशन में अद्वितीय कार्य किया। उन्होंने उर्दू और हिन्दी में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के प्रचार की दृष्टि से सस्ते संस्करण निकाले। विभिन्न विषयों पर छोटी-बड़ी दर्जनों पुस्तकें आर्य विद्वानों से लिखा कर प्रकाशित कीं। दाम सस्ते रहने के कारण इनकी प्रकाशित पुस्तकं धड़ाधड़ बिकने लगीं। प्रत्येक प्रकाशन के कई कई संस्करण निकले। पंजाब भर की, और पंजाब से बाहर की भी, आर्यसमाजों के उत्सवों पर महाशय राजपाल जी के आदमी इन के प्रकाशित साहित्य को ले जाया करते थे जहाँ उसकी खूब बिक्री होती थी। डाक से उनके प्रकाशन घर-घर में पहुँचते थे। इस प्रकार राजपाल जी ने आर्यसमाज के विचारों और सिद्धान्तों के प्रचार में निराला कार्य किया। इनका व्यापार हद दर्जे की ईमानदारी पर आधारित था। उस में प्रचार की भावना थी, लोभ का अंश नहीं था। प्रकाशनों का मूल्य सस्ता रखते और लेखकों को उचित पारिश्रमिक देते थे।

सन् 1924 में कादियान से मुसलमानों ने "उन्नीसवीं सदी का महर्षि" नाम से एक पुस्तक निकाली। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द पर बहुत भद्दे और अश्लील आक्षेप किये गये थे। आर्यसमाज के दिवंगत एक प्रसिद्ध विद्वान् ने "रंगीला रसूल" नामकी एक पुस्तक मुसलमानों की उक्त पुस्तक के जवाब में लिखी। जिसे राजपाल जी ने मई 1924 में प्रकाशित किया। रंगीला रसूल बिकता रहा। आरम्भ में उस पर न किसी मुसलमान ने आपत्ति उठाई और न ही सरकार ने कोई कार्यवाही की। उस पुस्तक की प्रति किसी मुसलमान ने महात्मा गांधी के पास भेज दी। गांधी जी ने अपने पत्र 'यंग इंडिया' में उस की कटु आलोचना कर दी। इस के बाद उस पुस्तक के विरुद्ध मुसलमानों में घोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। इस पर सरकार ने राजपाल जी पर अभियोग चलाया। निचले न्यायालय ने उन्हें जेल की सजा दी, पर हाईकोर्ट से आप बरी हो गये। राजपाल जी का अभिप्राय मुसलमानों को चिड़ाना नहीं था। हाईकोर्ट में जीत कर भी उन्होंने घोषणा कर दी कि उक्त पुस्तक को पुनः प्रकाशित नहीं किया जायेगा। पर मुसलमानों की कट्टरता शान्त न हुई। राजपाल जी को मार डालने की मुसलमानों की धमकियां दी जाने लगीं। राजपाल जी इन धमकियों से विचलित नहीं हुए। वे शान्तभाव से अपने सब कार्य करते रहे। राजपाल जी को मारने के लिये उन पर पहला आक्रमण किया गया। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और स्वामी वेदानन्द जी उस समय राजपाल जी की दुकान पर ही थे। उन के बचाव के प्रयत्न से राजपाल जी को घातक घव न लग सके। उन के हाथों, भुजा और जंघा पर घाव आए। महाशय जी को चिकित्सा के लिये महीना भर हस्पताल में रहना पड़ा। उन पर दूसरा आक्रमण अक्टूबर 1927 को हुआ। राजपाल जी उस समय दुकान पर न थे। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज किसी काम से उन की दुकान पर गये हुए थे। घातक अब्दुला अजीज ने उन्हें ही राजपाल जी समझ कर उन की पीठ में छुरा भोंक दिया। स्वामी जी बच गये पर उन्हें लम्बे अर्से तक हस्पताल में रहना पड़ा। आक्रमणकारी को सजा मिली। राजपाल जी को निरन्तर धमकियां मिलती रहीं कि या तो मुसलमान हो जाओ अन्यथा कत्ल कर दिये जाओगे। पर वे निर्भीकभाव से अपना काम करते रहे। अन्त में 6 अप्रैल 1929 को इल्मदीन नामक घातक ने अकस्मात् उन की दुकान पर आकर उन्हें छुरी के घाट उतार दिया। इल्मदीन पकड़ा गया और उस को फांसी मिली। राजपाल जी की हत्या का समाचार सुनकर लाहौर और पंजाब की सारी हिन्दु जनता विव्हल और उद्विग्न हो उठी। अपने धर्म के इस वीर सेवक और परवाने को अपनी श्रद्धांजलि देने के लिये उन की अर्थी के साथ सारा लाहौर उमड़ पड़ा। उन की शवयात्रा का जलूस जितना बड़ाथा उतना बड़ा जलूस लाहौर मे उस से पहले नहीं देखा गया था। लाखों आदमी

thearyasamaj.org

शव–यात्रा में चल रहे थे और लाखों नर–नारी बाज़ारों में और मकानों की छतों पर खड़े होकर उस आत्म–बलिदान पर अपनी श्रद्धा के फूल बरसा रहे थे।

अभियोग के दिनों में और उस के बाद भी बड़ा प्रयत्न किया गया कि राजपाल जी रंगीला रसूल के असली लेखक का नाम बता दें। उन्हें कत्ल कर दिये जाने की धमकियां तो दी ही जा रही थीं यदि राजपाल जी लेखक का नाम बता देते तो शायद उन के प्राण बच जाते। पर इस वीर पुरुष ने लेखक का नाम नहीं बताया। लेखक और प्रकाशक दोनों का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ही ले लिया। स्वयं मर जाना स्वीकार किया पर विद्वान् लेखक को बचा लिया। इस दृष्टि से उन का बलिदान और भी निराला और महान् हो जाता है। इस सामान्य पुस्तक विक्रेता ने अपने बलिदान में जो स्तम्भित कर देने वाली वीरता दिखाई है वह इतिहास की एक दुर्लभ वस्तु है। आर्यसमाज का यह गौरव है कि उस में इस प्रकार के प्राण–होता उत्पन्न होते रहे हैं।

जनता पर प्रभाव

प्रभु की वाणी वेद के उपदेशकों का अनुसरण करते हुए आत्माहुति की जो लहर ऋषि दयानन्द ने चलाई थी उस ने उन के शिष्यों में बहुत गहरा प्रभाव किया है। उससे आर्यसमाज की सर्वसाधारण जनता में भी बहुत गहरी बलिदान की भावना उत्पन्न हो गई है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले सर्वसाधारण आर्यसमाजी भी आवश्यकता होने पर बात की बात में अपने जीवन का बलिदान कर देते हैं। पर अपने सिद्धान्तों और धर्म को नहीं छोड़ते। जितने चाहें उतने उदाहरण इस सम्बन्ध में यहां दिया जा सकते हैं। स्थानाभाव से निदर्शन के रूप में केवल दो–चार उदाहरण ही हम यहाँ दे सकेंगे।

आर्यसमाज के इतिहास के प्रारम्भिक दिनों की घटना है। आर्यसमाज का अस्पृश्यता निवारण का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। पंजाब के रोपड़ नगर में एक पंडित सोमनाथ रहा करते थे। वे अपने नगर और आसपास के प्रदेश में अछूतोद्धार का काम बड़े बल और उत्साह से कर रहे थे। शहर और बिरादरी के लोग उन से नाराज हो गये। उन्हें और उन के परिवार को बिरादरी से निकाल दिया गया। शहर के सब कुओं से उन के लिये पानी भरना बन्द हो गया। पं. सोमनाथ इस से विचलित नहीं हुए। उन्होंने जोहड़ों और नहर से पानी लेकर पीना आरम्भ कर दिया। यह पानी साफ नहीं होता था। इस के कुछ दिन निरन्तर सेवन से उन की माता रोगी पड़ गई। डाक्टरों का इलाज आरम्भ हुआ। पर रोगिणी को लाभ न हुआ। डाक्टरों के पूछने पर कि रोगी को पानी कैसा दिया जाता है उन्हें सब स्थिति बताई गई। उन्होंने कहा कि जब तक रोगी को कुएँ का पानी नहीं पिलाया जायेगा तब तक उसे आराम नहीं होगा। कुएं का पानी तो बिरादरी वालों से अछूतोद्धार के काम में क्षमा मांगने से और भविष्य में यह काम न करने की प्रतिज्ञा करने से ही मिल सकता था। पं. सोमनाथ इस के लिये तैयार न थे। उधर माता अच्छी नहीं हो रही थी। सोमनाथ उदास रहने लगे। माता ने उन की चिन्ता भांप ली। उसने पुत्र से चिन्ता का कारण पूछा। पुत्र ने सच–सच कह दिया। वीर माता ने रोगशैया पर से मुस्कराकर कहा, "बैटा! मैं कब तक जीती रहूँगी? मैंने एक दिन तो मरना ही है। अभी सही। तुम मेरी खातिर अपना धर्म न छोड़ना। धर्म जान से प्यारी चीज़ है। वह मेरी जान से भी प्यारा है। तुम अपने धर्म पर डटे रहो। मैं धर्म की खातिर हंसते–हंसते मरूँगी।" वीर पं. सोमनाथ की माता सचमुच हंसते–हंसते मर गई। पीछे से बिरादरी वालों ने पं. सोमनाथ के परिवार के लिये स्वयं ही कुओं से पानी भरने की स्वीकृति दे दी।

सन् 1903 की एक घटना है। फरीदकोट रेलवे स्टेशन के पंडित तुलसीराम नामक एक स्टेशनमास्टर थे। ये दृढ़ आर्यसमाजी थे। अपने काम से जो समय खाली मिलता था उसमें आर्यसमाज का प्रचार किया करते थे। शहर के जैनी लोगों से इन का विशेष रूप में वाद–विवाद रहा करता था। जैनी लोग इन की युक्तियों से बड़े तंग रहा करते थे। वे इन्हें मार्ग से हटा देना चाहते थे। एक बार पंडित तुलसीराम ने बाहर से आर्य उपदेशक बुलाकर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का खूब प्रचार कराया। नास्तिकवाद का खण्डन हुआ। इस पर जैनी लोग पं. तुलसीराम से चिढ़ गये। एक दिन पंडित जी कहीं अकेले जा रहे थे। गोपीराम नाम के एक जैनी ने मौका देख कर पिसी हुई लाल मिर्च इनकी आंखों में झोंक दी। इस प्रकार इनके देखने में असमर्थ हो जाने पर उस नृशंस ने इन के

thearyasamaj.org

पेट में छुरा घोंप दिया। लोगों को पता लगने पर इन्हें अस्पताल में लाया गया। बहुत औषधोपचार किया गया पर आप बच न सके। इस प्रकार अपने धर्म की सेवा करते हुए आप ने अपने जीवन की आहुति दे दी।

काश्मीर राज्य के महाशय रामचन्द्र नामक एक महाजन थे। ये राज्य की तहसील में खजानची थे। आप को दलितोद्धार के काम से अगाध प्रेम था। तहसील के काम से जो वक्त बचता उस में आप यही काम करते थे। अखनूर तहसील में बुढारा नाम का एक ग्राम है। वहाँ के मेघ अछूतों में आपने वैदिकधर्म के प्रचार का खूब काम किया। वहाँ के राजपूत लोग इन के काम से क्रुध रहने लगे। रामचन्द्र जी ने अछूत बालकों के लिये एक पाठशाला खोलनी चाही। राजपूतों ने इस का घोर विरोध किया। नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि 14 जनवरी 1924 के दिन राजपूतों ने इकट्ठे होकर इन पर लाठियों की वर्षा आरम्भ कर दी। लाठियों की वर्षा से इनका अंग-अंग टूट गया। ये मूछित हो गये। पता लगने पर लोग इन्हें उठा कर अस्पताल ले गये। इलाज बहुत हुआ पर चोटें इतनी सख्त थीं कि ये बच न सके। 20 जनवरी को इन का प्राणान्त हो गया। इन के बलिदान से राजपूतों के हृदय बदल गये। जो विरोधी थे उन्होंने पाठशाला के लिये भूमि और धन दिया। इनकी स्मृति में आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब के तत्वावधान में बुटारा में प्रतिवर्ष एक शहीदी मेला लगता है।

आर्यसमाज के बलिदानों की माला के हैदराबाद (सिंध) के श्री नाथूराम जी भी एक उज्जवल रत्न हैं। अपने क्षेत्र में उन्होंने आर्यसमाज का खूब कार्य किया था। अनेक व्यायामशालायें खोली थी और अनेक आर्ययुवक समाजों की स्थापना की थी। सनातनियों और मुसलमानों की ओर से आर्यसमाज पर जो आक्षेप हुआ करते थे उन को वे समाधान किया करते थे। वहाँ मुसलमानों के अहमदी फिरके की एक अंजुमन थी। उक्त अंजुमन ने हिन्दुधर्म और हिन्दुमहापुरुषों पर गन्दे आक्षेप करने वाले इश्तिहार निकाले। उस से नाथूराम जी और उन के साथी तिलमिला उठे। नाथूराम जी ने मुसलमानों के इस प्रचार का उत्तर देने का संकल्प कर लिया। पहले तो उन्होंने ईसाइयों द्वारा इस्लाम पर लिखी हुई "तारीखे इस्लाम" नामक पुस्तक का सिंधी भाषा में अनुवाद करके उसे प्रकाशित किया। फिर एक ट्रेक्ट निकाला जिस में मौलवियों से इस्लाम के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे गये थे। ये दोनों पुस्तकें उन्होंने प्रचार की दृष्टि से लोगों में मुफ्त बांटी। इस्लाम के सम्बन्ध में खरी-खरी बातें बताने वाली इन दोनों पुस्तकों से मुसलमानों में खलबली मच गई। नाथूराम जी के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन किया गया। इस आन्दोलन से प्रभावित होकर सरकार ने नाथूराम जी पर मुकदमा चलाया। नाथूराम जी ने अपनी सफाई में कहा कि एक पुस्तक ईसाइयों की लिखी पुस्तक का अनुवादमात्र है, फिर दोनों पुस्तकों में जो कुछ लिखा गया है वह इस्लामी साहित्य के आधार पर लिखा गया है। उन्हांने अपने समर्थन में मुस्लिम साहितय से प्रमाण उपस्थित किये। फिर भी मैजिस्ट्रेट ने उन पर एक हज़ार का जुर्माना किया और डेढ़ साल की सजा दी। इस निर्णय के विरुद्ध चीफ कोर्ट में अपील की गई। 20 सितम्बर 1934 को अपील का निर्णय सुनाया जाना था। कचहरी दर्शकों से खचाखच भरी हुई थी। लोग जजों के बैंच के निर्णय की उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक एक दर्दभरी चीख निकली। नाथूराम जी के पास बैठे अब्दुल कयूम नामक एक धर्मान्ध मुसलमान ने उन के पेट में छुरा भौंक दिया था। उनकी अन्तड़िया बाहर निकल आईं। और वह उसी समय अमर पद को प्राप्त हो गये। घातक को पकड़ लिया गया और उसे फांसी दी गई। नाथूराम जी के शव का चीफ जज ने सिर झुका कर अभिवादन किया। शान से उन की अर्थी निकाली गई। अर्थी के साथ हज़ारों लोग श्मशान तक गये और शहीद के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस वीर ने निर्भीकभाव से अपने धर्म का प्रचार किया और उस के गौरव तथा मान की रक्षा के लिये अपने प्राणों पर भी खेल गया।

बलिदानों की इस श्रृंखला में हरियाणा के प्रसिद्ध भक्त फूलसिंह जी भी अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। हरियाणा प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार में भक्त फूलसिंह जी का बहुत ऊँचा स्थान है। आर्यसमाज के प्रचार की आप में इतनी अधिक लगन थी कि उस के लिये आपने अपनी सरकारी नौकरी भी छोड़ दी थी और सर्वात्मना समाज के प्रचार के कार्य में लग गये थे। आपने अपने प्रचार कार्य के प्रसंग में हरियाणा के गांव-गांव में भ्रमण

thearyasamaj.org

किया। लोगों को वैदिकधर्म के सिद्धान्तों का उपदेश किया। गांवों के लोगों के आपसी झगड़े सुलझाये। जिन्हें शराब आदि नशीले पदार्थों का सेवन करने की आदत थी उनकी वह आदत छुड़ाई। जो जूआ खेलने के व्यसन में फंसे थे उनका वह व्यसन दूर किया। हज़ारों लोगों को यज्ञोपवीत दिये और उन्हें आर्यसमाजी बनाया। वैदिकधर्म के प्रचार को दृढ़ता देने के लिये उन्होंने रोहतक जिले में भैंसवाल नामक गांव में बालकों के लिये और खानपुर नामक गांव में कन्याओं के लिये गुरुकुल की स्थापना की। उन दोनों संस्थाओं के लिये लाखों रुपया एकत्र किया। आप का वैयक्तिक जीवन भी शुद्ध, सरल और सात्विक था। आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में आने से पहले आप पटवारी का काम किया करते थे। उस समय आपने हज़ारों रुपये रिश्वत में लिये थे। आर्यसमाजी बन जाने पर आप को इस कार्य से घोरनफरत हो गई। और आपने यह नौकरी भी छोड़ दी तथा नौकरी के समय जिन-जिन से रिश्वत ली थी उन के रुपये भी वापिस कर दिये। उनके इस प्रकार के पवित्र और सात्विक जीवन के कारण ही लोग उन्हें भक्त जी कहने लग पड़े थे। अछूतोद्धार के कार्य में आप को बड़ी अभिरुचि थी। अछूत भाइयों को उनके अधिकार दिलाने के लिये आपने बड़े-बड़े कष्ट सहे। पांच-छः तो आपने इस कार्य के लिये लम्बे उपवास भी किये। इस प्रसंग में हिसार ज़िले के मोठ गांव में किया गया आप का उपवास तो बहुत ही प्रसिद्ध है।

इस गांव के मुसलमान रांघड़ लोग वहां के हिन्दू अछूतों को अपने कुओं से तो पानी भरने ही नहीं देते थे, उन्हें अपने कुएं भी नहीं खोदने देते थे। अछूतों ने अपना कुआं खोदा तो रांघड़ों ने उसे मिट्टी से भर दिया। यह समाचार पाकर भक्त जी वहाँ पहुँचे। रांघड़ों को समझाया पर ये नहीं माने। इस पर भक्त जी ने उपवास आरम्भ कर दिया। चौबीस दिन तक उनका उपवास चला। तब कहीं जाकर गांव के लोगों के दिल पिघले और उन्होंने अछूतों के लिये पक्का कुआँ बनवा कर दिया। उनके इस सात्विक उपवास की प्रशंसा महात्मा गाँधी जी ने भी अपने हरिजन पत्र में की थी। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भक्त जी के प्रयत्न से हरियाणा प्रदेश के लगभग 700 व्यक्तियों ने भाग लिया था और वहाँ से सत्याग्रह के लिये हज़ारों रुपया एकत्र हुआ था। लोहारू की मुस्लिम रियासत में आर्यसमाज के प्रचार पर पाबन्दी थी। आर्यसमाजियों ने लोहारू में आर्यसमाज का उत्सव करने का निश्चय किया और नगर कीर्तन निकाला। वहाँ की मुस्लिम पुलिस और जनता ने नगर कीर्तन पर पूरी तैयारी के साथ आक्रमण किया। नगर कीर्तन में भक्त फूलसिंह जी प्रमुख भाग ले रहे थे। उनको सख्त चोटें आईं। मार खा कर भी उन्होंने वहाँ आर्यसमाज का प्रचार किया और अपने अधिकारों की रक्षा की। भक्त जी के प्रचार कार्य से, विशेष कर उन के अछूतोद्धार सम्बन्धी कार्य से अनेक लोग भक्त जी से नाराज रहने लगे थे। किसी असन्तुष्ट व्यक्ति ने 14 अगस्त 1942 को रात को 9 बजे कन्या गुरुकुल खानपुर में उन्हें गोली मार दी। अपना सारा जीवन तो भक्त जी ने वैदिक धर्म पर न्यौछावर कर ही रखा था। अन्त में अपने प्राण भी उसी पर न्यौछावर कर दिये।

आर्यसमाज ने अपने 87 साल के छोटे से जीवन में लगभग 70 बलिदान दिये हैं। उन सब बलिदानों की कथा स्थानाभाव के कारण यहाँ लिख सकना संभव नहीं है।

हैदराबाद का धर्म युद्ध

सन् 1939 में आर्यसमाज की ओर से हैदराबाद रियासत में जो सत्याग्रह संग्राम लड़ा गया था उस के बलिदानों की कहानी ऊपर निर्दिष्ट बलिदानों से अलग है। वह सारा सत्याग्रह ही एक महान् बलिदान था। धर्म के इतिहास में वह सत्याग्रह एक अद्भुत कथा है। वह आर्यसमाज का अमर गौरव है। हैदराबाद रियासत की प्रजा में हिन्दुओं की संख्या कोई 90 प्रतिशत है। रियासत का राजा मुसलमान था। धर्मान्ध मुसलमानों को रियासत में हिन्दुओं की इतनी भारी संख्या सहन नहीं होती थी। वे हिन्दुओं की संख्या को कम करना चाहते थे। इसके लिये कई प्रकार के उपाय किये जाते रहे। आर्यसमाज का प्रचार मुसलमानों के मनसूबों में रुकावट डालता था। आर्यसमाज के प्रचार से जब हिन्दुओं को अपने सच्चे धर्म का पता लग जाता था तो वे फिर मुसलमानों के बहकावे में नहीं आते थे। और जो भूल से मुसलमान हो गये थे वे फिर अपने धर्म में आ जाते थे। मुसलमान प्रचारकों को यह स्थिति असह्य प्रतीत हुई। उन्होंने आर्यसमाज के विरुद्ध राज्य के अधिकारियों के कान भरने आरम्भ कर

thearyasamaj.org

दिये। मुस्लिम शासक मुल्लाओं के बहकावे में आ गये। उन्होंने आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था समझ लिया। धीरे-धीरे राज्य की ओर से आर्यसमाज के काम में रुकावटें डाली जाने लगी। अवस्था यहाँ तक आ गई कि आर्यसमाज के लिये अपने धर्म का प्रचार कर सकना सर्वथा असंभव हो गया। प्रचार तो दूर रहा आर्यसमाजियों के लिये अपने धार्मिक कृत्य और साप्ताहिक सत्संग कर सकना भी असंभव हो गया। राज्य की आज्ञा बिना न मन्दिर बन सकते थे, न अग्निहोत्र हो सकते थे, न मन्दिरों पर ओ3म् की ध्वजाएं लग सकतीथीं। न वार्षिक उत्सव, न सत्संग और न कोई व्याख्यान हो सकते थे। ऐसा नियम कर देना ही आर्यसमाज के जन्मसिद्ध अधिकारों पर कुठाराघात था। इस पर विचित्र बात यह है कि मांगने पर राज्याधिकारी ऐसी आज्ञा नहीं देते थे। रियासत के आर्यसमाजी लोग सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में निरन्तर 6 साल तक चिट्ठी पत्री द्वारा तथा राज्याधिकारियों से मिलकर अपने अधिकरों की प्राप्ति के लिये यत्न करते रहे। पर राज्य की ओर से कोई सुनवाई न हुई।

अन्त में तंग आकर 30 जनवरी 1939 के दिन महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज के जन्मसिद्ध अधिकारों की रक्षा के लिये आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्याग्रह संग्राम छेड़ दिया। भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत से आर्यों के दल के दल आकर रियासत में प्रविष्ट होने और वहाँ अपने धर्म का प्रचार करने लगे। रियासत के अधिकारियों ने इन आर्यवीरों को मारना पीटना और जेलों में ठूंसना शुरु कर दिया। जेलों में असह्य यन्त्रणायें दी जाने लगीं। घोर यन्त्रणायें सहकर भी आर्यवीर स्वयं शान्त रहते थे। किसी को कटुवचन तक भी न कहते थे। कष्ट सहते थे और राज्याधिकारियों को सद्बुद्धि देने के लिये भगवान से प्रार्थना करते थे। इस समय प्रत्येक आर्यवीर ने ब्राह्मण वृत्ति धारण कर ली थी। सत्याग्रह संग्राम युद्ध ही ब्राह्मणों का है। सत्याग्रह का योद्धा प्रतिद्वन्दी पर प्रहार नहीं करता है। उस के प्रहार सहता है। प्रहार सहकर अपने हृदय की सद्भावना और भगवान् से प्रार्थना द्वारा विरोधी के हृदय को जीतना चाहता है। इस युद्ध में आर्यवीरों ने ब्राह्मणत्व के इसी हथियार से काम लिया। राज्याधिकारियों द्वारा सत्याग्रही आर्यवीरों पर होने वाले अत्याचारों का समाचार सुनकर आर्यजनता भयभीत नहीं हुई। इन समाचारों से जनता में जोश, उत्साह और उमंग और अधिक बढ़ने लगे। रियासत में जाकर सत्याग्रह करने वाले आर्यवीरों के दलों का तांता बंध गया। आर्यसमाज के नेता,प्रचारक और सर्वसाधारण धड़ाधड़ सत्याग्रह के लिये जाने लगे। माताओं ने अपने पुत्रों को, पत्नियों ने अपने पतियों को और बहिनों ने अपने भाइयों को उन के माथे पर तिलक लगा और प्रेम का पाथेय देकर स्वयं सत्याग्रह के लिये प्रस्थापित किया। सत्याग्रही धर्मवीरों से रियासत की जेलें भर गईं। रियासत के लिये सत्याग्रहियों का संभालना भारी हो गया। उस के हाथ-पैर फूल गये। इस के साथ ही आर्यों के त्याग, तप, कष्ट सहिष्णुता और विशुद्ध धर्म प्रेम ने राज्याधिकारियों के हृदयों को हिलाना आरम्भ किया। उन्होंने स्थिति पर गम्भीरता से सोचना प्रारम्भ किया। उन्हें अपनी भूल पता चली। परमात्मा ने उन के हृदयों में बल दिया। उन्होंने आर्य समाज के धर्म प्रचार के जन्मसिद्ध अधिकार को उसे फिर से देकर अपनी भूल सुधारने का निश्चय कर लिया। 19 जुलाई को रियासत की सरकार ने इस सम्बन्ध में अपनी घोषणा प्रकाशित कर दी। इस घोषणा की शब्द रचना से आर्यसमाज सन्तुष्ट न हुआ।

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गद्दे ही गद्दे

Singhal Furnishing

J.K. Singhal
S.K. Singhal

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004

Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

thearyasamaj.org

सत्याग्रह अबाध गति से चलता रहा। पुनः 8 अगस्त को राज्याधिकारियों की ओर से 19 जुलाई की घोषणा का और अधिक स्पष्टीकरण किया गया। इस स्पष्टीकरण से आर्यसमाज का सन्तोष हो गया और उसी 8 अगस्त के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्याग्रह समाप्त करने की घोषणा कर दी। और इस प्रकार आर्यों के धर्मप्रेम और तज्जन्य तप, त्याग और कष्ट सहिष्णुता ने अधर्म और अत्याचार पर विजय प्राप्त की।

मुट्ठी भर आर्य समाजियों ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए इस सत्याग्रह के समय जिस आत्मत्याग और बलिदान की भावना का परिच दिया था उससे सब देखने वाले स्तम्भित रह गये थे। 8 अगस्त तक 10579 सत्याग्रही जेलों में जा चुके थे। इसके अतिरिक्त कोई 3000 सत्याग्रही उस समय भिन्न-भिन्न केन्द्रों में कूच करने के लिए तैयार बैठे थे। और नये सत्याग्रही धड़ाधड़ भर्ती हो रहे थे। जो सहसा सत्याग्रह के बन्द हो जाने के कारण जेलों में न जा सके। फिर यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सत्याग्रह का स्थान सत्याग्रहियों ने अपने नगरों के समीप न था। सत्याग्रहियों के अपने नगरों से वह स्थान सैकड़ों और हज़ारों मील दूर था। सत्याग्रहियों को हज़ार-हज़ार, डेढ़-डेढ़ हजार मील तक चलकर सत्याग्रह के स्थान में पहुँचना होताथा। इससे सत्याग्रह के संचालन और उसके प्रबन्ध की कठिनाइयों का अनुमान सहज ही किया जा सकता है। इस सत्याग्रह में आर्यसमाज को 11 लाख रुपये खर्च करने पड़े थे।

इस सत्याग्रह में राज्य अधिकारियों के हाथों आर्यवीरों ने जो घोर कष्ट सहे उनकी कथा यहाँ लिखना सम्भव नहीं है। कोई ऐसा कष्ट नहीं था जो सत्याग्रहियों को न दिया गया हो। उनके रहने के स्थान मैले से मैले थे। उन्हें भोजन खराब से खराब और अव्यवस्थित रूप में दिया जाता था। चक्की पिसवाने और पत्थर कुटवाने जैसे घोर परिश्रम के काम उनसे लिए जाते थे। अनेक अवस्थाओं में सत्याग्रहियों को भयंकर रूप में मारा और पीटा जाता था। नंगा करके उनके शरीरों पर कई-कई दर्जन बेंत भी अनेक अवस्थाओं में लगाये जाते थे। रोगी हो जाने पर औषधोपचार की कोई समुचित व्यवस्था न थी। और भी अनेक प्रकार के कष्ट सत्याग्रहियों को रियासत की जेलों में सहने पड़ते थे। और यह सब कुछ उन्हें सहना पड़ता था अपने धर्म-प्रेम के कारण। धर्म-प्रेम के अतिरिक्त आर्यवीरों का कोई और दूसरा अपराध न था।

इन अमानुषिक अत्याचारों के कारण 28 सत्याग्रहियों का रियासत की जेलों में ही प्राणान्त हो गया। इन 28 बलिदानों में से एक-एक की कहानी रोमांचकारिणी है। स्थानाभाव से हमें इन कहानियों के लिखने के लोभ का संवरण करना पड़ता है।

यहाँ केवल हुतात्मा श्री श्यामलाल जी के बलिदान का ही कुछ पंक्तियों में निर्देश कर देना पर्याप्त होगा। श्री श्यामलाल जी हैदराबाद राज्य के सबसे अधिक उत्साही, निर्भय और लगन वाले आर्यसामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्हें हैदराबाद राज्य की आर्यसमाज के प्राण कह दिया जाये तो भी अत्युक्ति न होगी। ये अपनी समग्रशक्ति से उस प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार में लगे हुए थे। तथा उनमें ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति असीम प्रेम था। उनमें आर्यसमाज के प्रचार के लिये लगन और उत्साह की प्रचण्ड ज्वाला जलतीथी। योग्य वकील होते हुए भी उनमें धन कमाने की लालसा नहीं थी। वे अपनी वकालत के काम की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सारा समय आर्यसमाज के काम में ही व्यस्त रहते थे। उन्होंने हैदराबाद राज्य के नगर-नगर और गांव-गांव की यात्राएं की थीं और स्थान-स्थान पर आर्य समाजों की स्थापना की थी। हैदराबाद राज्य में आर्य समाजों का जाल सा बिछ गया था। आर्य समाजों की संख्या डेढ़ दो सौ तक पहुँच जाने पर उन्हीं के प्रयत्न से हैदराबाद राज्य की आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी। वे इस प्रतिनिधि सभा के पहले प्रधान और मन्त्री रहे थे। उन के आर्य समाज के प्रचार की इन गतिविधियों को देख कर निजाम सरकार और वहाँ के मुसलमान उनके घोर द्वेषी और शत्रु बन गये थे और उनके प्राणों के प्यासे रहने लगे थे। हैदराबाद राज्य में आर्यसमाज की बढ़ती हुई प्रचण्ड शक्ति से वहाँ की मुस्लिम सरकारें और मौलवी लोग कांप उठे थे। और उन्होंने आर्यसमाज को कुचल डालने का निश्चय कर लिया था। जिसके विरोध में आर्यसमाज ने ऊपर की पंक्तियों में वर्णित सयत्याग्रह का युद्ध लड़ा था। निजाम सरकार को कंपा देने वाली आर्यसमाज की यह शक्ति श्री श्यामलाल जी और उनके साथियों की ही पैदा की हुई थी। श्यामलाल जी को अनेक कष्ट दिये गये और उन पर

thearyasamaj.org

अनेक बार झूठे मुकदमे चलाये गये। फिर भी श्यामलाल जी निर्भय हो कर अपना काम करते रहे। उन्होंने अपने भाषणों से जनता में आग भर दी और उसे निडर बना डाला। सैंकड़ों और हज़ारों लोग उनके साथ मिल कर काम करने के लिये आगे आ गये। राज्य का मुस्लिम सरकार इससे और डरी। पुनः एक झूठा मुकदमा उनके विरुद्ध बनाया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया। श्यामलाल जी का शरीर प्रारम्भ से ही दुर्बल था और प्रायः रोगी रहा करते थे। दवाइयों का सेवन चलता रहता था और वे भोजन के रूप में प्रायः दुग्ध ही लिया करते थे। जब उन्हें अब अन्तिम बार बीदर की जेल में डाला गया तो उनके स्वास्थ्य की इसी प्रकार की दीन अवस्था थी। जेल के अधिकारियों ने उनके इस प्रकार के दुर्बल स्वास्थ्य की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। औषधोपचार भी ठीक नहीं हुआ और उन्हें दूध देना भी बन्द कर दिया गया। इस सम्बन्ध में उनके निवेदनों और शिकायतों की ओर कोई ध्यान् नहीं दिया गया। उन्हें रेत और कंकड़ मिली हुई ज्वार-बाजरे की अधपकी रोटियां खाने को दी गईं जिन्हें उनका दुर्बल हाजमा बरदाश्त नहीं कर सकता था। उन्हें जेल में और भी अनेक प्रकार की यन्त्रणाएं दी गईं। उन्हें मारा और पीटा भी गया। तेज चाकू और छुरियों से उन्हें घायल भी किया गया। इस प्रकार की अमानुषी यन्त्रणाएँ सहते हुए वे 16 दिसम्बर 1938 को अमर पद को प्राप्त हो गये और आर्यसमाज के इतिहास में सदा चमकता रहने वाला बलिदान का उदाहरण उपस्थित कर गये।

इतना भारी बलिदान करके आर्यसमाज ने हैदराबाद के धर्मयुद्ध में विजय प्राप्त की थी।

हिन्दी को देन

ऋषि दयानन्द की दृष्टि दिव्य थी। वे अपनी अलौकिक प्रतिभा से बहुत दूर की बातों को देख लेते थे। उनकी मातृभाषा गुजराती थी और वे संस्कृत विद्वान् थे। फिर भी उन्होंने अपने प्रायः सभी ग्रंथ हिन्दी में लिखे। जो ग्रंथ उन्होंने संस्कृत में लिखे उनका भी हिन्दीअ नुवाद साथ दिया। उन्होंने देख लिया था कि भले ही राज-भाषा अंग्रेजी हो, देश में सर्व साधारण को पारस्परिक व्यवहारिक और सम्पर्क की भाषा तो हिन्दी ही है। उसी के आधार पर देश की सर्व साधारण जनता कन्याकुमारी और रामेश्वरम् से अमरनाथ तक की तथा सोमनाथ और द्वारिका से जगन्नाथ तक की, सारे देश की यात्रायें करती रहती है। उसी के आधार पर देश के किसी भी भाग के व्यापारी उसके किसी भी दूसरे भाग में जाकर अपना व्यापार-व्यवसाय कर लेते हैं। हिन्दी की इस व्यापकता मो देख कर जहाँ अपने विचारों के प्रसार की दृष्टि से ऋषि ने अपने ग्रंथ हिन्दी में लिखे वहाँ उन्होंने दिव्य दृष्टि से यह भी देख लिया था कि आगे चलकर देश की राजभाषा हिन्दी ही बनेगी। इसी लिये उन्होंने आर्य समाजियों के लिये हिन्दी सीखना एक आवश्यक कर्तव्य रखा था। ऋषि हिन्दी को आर्य भाषा कहा करते थे। प्रत्येक आर्य समाजी को आर्यभाषा सीखनी चाहिए यह ऋषि का आदेश था।

इसीलिये हिन्दी आर्यसमाजियों के लिये प्रारम्भ से ही एक आदरणीय भाषा रही है। आर्यसमाजी प्रारम्भ से ही हिन्दी सीखते रहे हैं। आर्यसमाजों के उत्सव, कथा-वार्ता और सत्संग सब आरमभ से ही हिन्दी में ही होते रहे हैं। पंजाब के पश्चिमी भाग में लोगों की घरेलू बोल-चाल की भाषा पंजाबी रही है। फिर भी वहाँ के आर्यसमाजों के उत्संव, कथा-वार्ता और सत्संग हिन्दी में ही होते रहे हैं। विधर्मियों से आर्यसमाजियों के शास्त्रार्थ तक भी वहाँ हिन्दी में ही होते रहे हैं। इतना ही नहीं वहाँ की प्रायः प्रत्येक आर्यसमाज ने एक-एक कन्याओं का स्कूल चला रखा था। इन सब स्कूलों में हिन्दी के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती थी। वहाँ के डी.ए.वी. स्कूल और कालेजों में भी हिन्दी पढ़ाई जाती थी। सतासी (87) वर्ष पूर्व अपने जन्मकाल से ही पंजाब के आर्यसमाजियों ने इस प्रकार हिन्दी को अपना रखा था। उसी समय से वहाँ के सनातनी हिन्दू भाइयों ने भी हिन्दी को इसी प्रकार अपना रखा था। उन के उत्सव, कथा-वार्ता और सत्संग भी सब हिन्दी में ही होते रहे हैं। उन की कन्या पाठशालाओं में भी सदा हिन्दी के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती रही है। उन के स्कूल और कालेजों में भी हिन्दी सदा ही पढ़ाई जाती रही है। हिन्दुओं की धार्मिक कथा-वार्ता और प्रवचन तो न जाने कितने पुराने समय से हिन्दी में ही होते रहे हैं। आर्यसमाजियों और हिन्दुओं के शिक्षणालयो में पंजाबी के माध्यम से तो कभी शिक्षा दी ही नहीं गई, एक भाषा के रूप में भी कभी उन में पंजाबी नहीं पढ़ाई गई। पंजाब के

thearyasamaj.org

हिन्दू राज-भाषा होने के कारण उर्दू और अंग्रेजी तो पढ़ते रहे हैं, किन्तु पंजाबी पढ़ने का प्रचलन उन में नहीं था। पंजाब के हिन्दू पंजाबी को हिन्दी की ही एक अप्रभ्रंश बोली समझते रहे हैं जो कि घरेलू बोल-चाल में काम आती है। वे अपनी शिक्षा की भाषा हिन्दी को ही मानते रहे हैं और उनका सदा यह प्रयत्न और इच्छा रही है कि शिक्षा की भाषा बनने के साथ-साथ हिन्दी राज-काज की भाषा भी बन जाये।

अंग्रेजी शासनकाल में तो शिक्षा की भाषा अंग्रेजी थी और राजकाज की भाषा उर्दू और अंग्रेजी थी। देश के स्वतन्त्र हो जाने पर प्रश्न उठा कि पंजाब में शिक्षा और राजकाज की भाषा कौन हो। हिन्दुओं की इच्छा थी कि क्योंकि समूचे पंजाब में हिन्दुओं की संख्या70 प्रतिशत है और वे हिन्दी को अपनी भाषा मानते हैं इसलिये पंजाब की शिक्षाअ ौर राजकाज की भाषा हिन्दी होनी चाहिये। पंजाब के जिस पश्चिमी भाग में घरेलू बोल-चाल की भाषा पंजाबी है वहाँ सिखों की संख्या हिन्दुओं से कुछ थोड़ी सी अधिक है। सिखों ने यह मांग की कि पंजाब के इस भाग की शिक्षा और राजकाज की भाषा पंजाबी होनी चाहिये। वास्तव में तो सिख चाहते हैं कि पंजाब के इस भाग को पंजाबी सूबा के नाम से एक पृथक राज्य या प्रांत ही बना दिया जाना चाहिये। पंजाबी सूबे की उनकी मांग का विरोध हिन्दू तो करते ही हैं सरकार ने भी अभी तक उन की इस मांग को स्वीकार नहीं किया है। परन्तु इस भाग में पंजाबी भाषा को शिक्षा और राजकाज की भाषा बना देने का उन की मांग को सरकार ने स्वीकार कर लिया है। सरकार ने यह सूत्र बनाया है कि पंजाब के पंजाबी भाषा भाग में प्रारम्भ से शिक्षा का माध्यम गुरुमुखी लिपि में लिखी पंजाबी होगा और पांचवीं कक्षा से हिन्दी भी एक आवश्यक विषय के रूप में पढ़ाई जायेगी। तथा जिला स्तर तक राजकाज की भाषा भी गुरुमुखी लिपि में लिखी हुई पंजाबी ही होगी। दूसरी ओर पंजाब के हिन्दी भाषी भाग में प्रारम्भ से शिक्षा का माध्यम देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी होगी और पांचवीं कक्षा से पंजाबी भी एक आवश्यक विषय के रूप में पढ़ाई जायेगी तथा जिला स्तर तक राजकाज की भाषा भी हिन्दी ही होगी। विश्वविद्यालय की शिक्षा के माध्यम के विषय में तथा जिलास्तर से ऊपर के राजकाज की भाषा और हाईकोर्ट की भाषा के विषय में अभी तक सरकार ने कोई निश्चय नहीं किया है। इन स्तरों पर दुर्भाग्य से अभी अंग्रेजी ही चलती है। परन्तु भय है कि प्रारम्भिक शिक्षा के माध्यम की तथा जिला स्तर तक के राजकाज की भाषा के सम्बन्ध में जिस प्रकार का निश्चय किया गया है उसी प्रकार का निश्चय आगे चलकर ऊपर के स्तरों के सम्बन्ध में भी किया जायेगा।

सिख भाइयों के पंजाबी के प्रति प्रेम और आग्रह को ध्यान में रखते हुए हिन्दुओं ने अपनी मांग यह रखी कि सारे पंजाब में हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषायें समान रूप से चलें। शिक्षा के माध्यम के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को स्वतन्त्रता रहे कि वे दोनों में से जिसे चाहें उस भाषा को अपनी शिक्षा का माध्यम चुन लें, राजकाज में दोनों भाषाओं के प्रयोग की स्वतन्त्रता हो, जो लोग सरकारी नौकरियों में जायें उन के लिये दोनों भाषाओं में से जिसे वे जानते हों उस का सीखना आवश्यक हो। हिन्दुओं की यह मांग है कि पंजाबी के लिये गुरुमुखी लिपि में ही लिखी जाने का प्रतिबन्ध न हो। हिन्दुओं का कहना है कि पंजाबी की लिपि कभी भी एकमात्र गुरुमुखी ही नहीं रही। अंग्रेज़ी शासन काल में पंजाबी को देवनागरी, फारसी (उर्दू) और गुरुमुख्ाी किसी भी लिपि में लिख सकने की स्वतन्त्रता थी। अब भी पंजाबी को नागरी में लिखने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये। पंजाब के हिन्दू पंजाबी को हिन्दी की ही एक बोली मानते हैं जिस का वे घरेलू बातचीत में प्रयोग करते हैं। वे अपनी शिक्षा और राजकाज की भाषा हिन्दी को ही बनाना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान में ब्रजभाषा, अवधी, मागधी और राजकाज की भाषा हिन्दी स्वीकार की गई है। क्योंकि इन बोलियों को हिन्दी की ही बोलियां समझा जाता है। प्रांत और देश की एकता की दृष्टि से हिन्दी की इन विभिन्न बोलियों को शिक्षाअ ौर राजकाज की भाषा न बना कर समाचार पत्रों और साहित्यिक रचनाओं में लिखी जाने वाली हिन्दी को ही इन प्रान्तों में शिक्षा और राजकाज की भाषा स्वीकार किया गया है। पंजाब के हिन्दू कहते हैं कि पंजाबी भी हिन्दी की एक बोली है। इस बोली को शिक्षा और राजकाज की भाषा न बना कर हिन्दी को ही शिक्षा और राजकाज की भाषा बनाना चाहिये। जहाँ पंजाब के हिन्दुओं का ध्यान रखते हुए ऐसा किया जाना चाहिये वहाँ देश की एकता की दृष्टि

thearyasamaj.org

से भी ऐसा करना उचित है। यदि सिख भाई पंजाबी को अपनी शिक्षा की और राजकाज की भाषा बनाना चाहते हैं तो उन के लिये वैसा कर दिया जाये। पर हिन्दुओं की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षाअ ौर राजकाज के लिये उन पर पंजाबी जबरदस्ती नहीं थोपी जानी चाहिये। यह हिन्दुओं का जन्म-सिद्ध अधिकार है कि वे जिस भाषा को चाहें उसे अपनी शिक्षा की और राजकाज की भाषा बना सकें। सिखों की जिद्द और दुराग्रह को पूरा करने के लिये हिन्दुओं का यह अधिकार छीन कर उन पर जबरदस्ती पंजाबी नहीं थोपी जानी चाहिये। हिन्दू सिखों को चिढ़ाने के लिये हिन्दी की मांग नहीं कर रहे हैं। पंजाब के आर्यों और हिन्दुओं की हिन्दी के प्रति निष्ठा तो देश के स्वतन्त्र होने से भी बहुत पहले से, अंग्रेजी शासन के समय से ही लगभग सौ साल से चली आ रही है। वास्तव में तो इस से भी बहुत अधिक पहले से पंजाब के हिन्दू हिन्दी को अपनाते रहे और उसे अपनी भाषा मानते रहे हैं। अब तो देश के नये विधान में हिन्दी को राज-भाषा स्वीकार कर लिया गया है। यदि पंजाब के हिन्दू देश की राजभाषा को अपनी शिक्षा को और राजाकाज की भाषा बनाना चाहते हैं तो इस में सरकार के और किसी दूसरे के नाराज होने की कौन सी बात है? उलटा हिन्दुओं की इस मांग से तो सरकार को प्रसन्न ही होना चाहिये कि पंजाब के हिन्दु देश की राज-भाषा को ही अपनी भाषा बनाकर देश की एकता को मजबूत करना चाहते हैं। हिंदुओं की जो मांग है उससे हिन्दुओं के अधिकारों और भावनाओं की रक्षा होती है और सिखों के साथ किसी प्रकार का अन्याय नहीं होता। सिख पंजाबी को अपनी शिक्षा की और राजकाज की भाषा बनाने के लिये स्वतन्त्र हैं। परन्तु सिखों की यह मांग कि पंजाब के पश्चिमी भाग के हिन्दुओं की भी शिक्षा और राज-काज की भाषा पंजाबी ही होनी चाहिये तथा पूर्वी भाग के हिन्दुओं के बालकों को भी शिक्षणालयों में गुरुमुखी लिपि और पंजाबी भाषा बाधित रूप में पढ़ाई जानी चाहिये हिन्दुओं के साथ अन्याय करती है और उन के अधिकारों का हनन करती है। हिन्दुओं की मांग में हिन्दु और सिख दोनों के लिये ऐच्छिक्ता है। सिखों की मांग में हिन्दुओं पर बन्धन है।

परन्तु पंजाब के हिन्दुओं के दुर्भाग्य से हमारे देश की कांग्रेस सरकार ने सिखों की यह अन्यायपूर्ण मांग स्वीकार कर ली है और पंजाब के हिन्दी प्रदेश और पंजाबी प्रदेश इस प्रकार दो भाग बना कर ऊपर उल्लिखित सूत्र भाषा के सम्बन्ध में बना दिया है। और इस सूत्र के अनुसार सरकार क्रियात्मक कार्यवाही भी करने जा रही है। यद्यपि सारे पंजाब में ही हिन्दी बोली और समझी जाती है तथा पंजाब के 70 प्रतिशत हिन्दुओं की भावनायें हिन्दी के साथ जुड़ी हुई हैं तो भी सिखों के अनुचित दबाव में आकर सरकार हिन्दुओं के साथ अन्याय कर रही है और उन की भावनाओं को कुचल रही है।

पंजाब के आर्य समाजियों और हिन्दुओं ने सरकार से बार-बार आग्रह किया कि वह सिखों की अन्यायपूर्ण मांग के आगे दब कर हिन्दुओं के साथ अन्याय न करे। आर्यसमाज ने हिन्दुओं के इस आन्दोलन का नेतृत्व संभाला। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब इन दोनों सभाओं ने मिलकर पंजाब हिन्दी रक्षा समिति का निर्माण किया। आर्यसमाज से बाहर के लोगों का भी सहयोग लिया गया। आन्दोलन चलता रहा। समाचारपत्रों में चर्चा चलती रही और स्थान-स्थान पर सभा-सम्मेलन हाते रहे जिन में सरकार की नीति की आलोचना होती रही, उस के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकार किये जाते रहे। हज़ारों की संख्या में स्वीकृत किये गये ये प्रस्ताव प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों के पास भेजे गये।प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों से अनेक शिष्यमण्डल (डेपुटेशन) मिले । हिन्दुओं का दृष्टिकोण विस्तार से सरकार के सम्मुख रखा गया। पर इस सब प्रयत्नों का कोई परिणाम नहीं निकला। हिन्दुओं की न्यायोचित मागें स्वीकार नहीं की गईं। सिखों के दबाव में आकर सरकार हिन्दुओं के साथ अन्याय करने के अपने निश्चय पर दृढ़ रही। तब यह सारी परिस्थिति आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के सम्मुख रखी गई। उक्त सभा ने भी एक सार्वदेशिक हिन्दी रक्षा समिति बनाई और उसका नेतृत्व आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त को सौंपा। गुप्त जी ने भी सरकार के विचारों को बदलने का बहुत प्रयत्न किया। वे अनेक बार प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों से मिले। उनके आगे आर्यों और हिन्दुओं का दृष्टिकोण स्पष्टता के साथ रखा। गुप्त जी इस प्रसंग में नेहरू जी और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद जी से भी अनेक बार मिले। उनके इन प्रयत्नों का भी कोई

thearyasamaj.org

परिणाम नहीं निकला। सिखों की अन्यायपूर्ण मांगों को स्वीकार करके हिन्दुओं के साथ न्याय न करने के अपने निश्चय पर सरकार यथापूर्वक स्थिर रही।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन

जब कई वर्षों के निरन्तर प्रयत्न के पश्चात् भी सरकार आर्यों और हिन्दुओं के हिन्दी सम्बन्धी अधिकारों की रक्षा करने के लिये तैयार नहीं हुई तो आर्यसमाज के लिये इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं रह गया कि वह अपने अधिकारों की रक्षा के लिये सब प्रकार का बलिदान करने के लिये उद्यत हो जाये। इस परिस्थिति में श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के नेतृत्व में सार्वदेशिक हिन्दी रक्षा समिति ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया। सत्याग्रह की घोषणा होते ही आर्यसमाजों में सत्याग्रह में भाग लेने के लिये उद्यत आर्यवीरों के नाम लिखे जाने लगे और धन संग्रह होने लगा। आर्यपुरुष अपने आदर्शों और अधिकारों की रक्षा के लिये सदा तैयार रहते ही हैं। बात की बात में हज़ारों आर्यवीरों ने सत्याग्रह के लिये अपने नाम लिखा दिये और थोड़े ही समय में उस के लिये लाखों रुपया एकत्र हो गया। जून 1957 में सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया गया। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री स्वामी आत्मानन्द जी के नेतृत्व में पहला जत्था सत्याग्रह के लिये चण्डीगढ़ गया। फिर तो एक के बाद एक जत्थे जाने प्रारम्भ हो गये। शुरु में तो सरकार सत्याग्रहियों को जेल में न भेजकर लारियों में बिठा कर किसी निर्जन स्थान में छोड़ देती थी। सरकार सोचती थी कि इससे सत्याग्रही तंग आ जायेंगे और उन का उत्साह मन्द पड़ जायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ। सत्याग्रहियों के दल के दल निरन्तर आते रहे। तब सरकार सत्याग्रहियों को जेलों में भेजने लगी। जेलों में जाने और वहाँ के कष्ट सहने के लिये भी सत्याग्रहियों के दल के दल आते रहे। आर्यसमाज के महाशय कृष्ण जी, श्री बुद्ध देव जी विद्यालंकार, श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती और श्री वीरेन्द्र जी, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी और श्री आनन्दभिक्षु जी आदि अनेक प्रसिद्ध नेता भी जेल में गये और वहाँ की यंत्रणायें सहीं। श्री स्वामी आनन्दभिक्षु जी को तो जेल में अग्निहोत्र करने के अपने अधिकार की रक्षा के लिये लगभग दो मास तक अनशन व्रत भी करना पड़ा था। सारे भारत की आर्यसमाजों ने अपने यहाँ से आर्यवीरों के दल इस सत्याग्रह में भाग लेने के लिये भेजे। पंजाब के हिन्दी भाषी प्रदेश हरियाणा के आर्यों ने इस सत्याग्रह में सब से अधिक संख्या में भाग लिया। उस प्रदेश के प्रसिद्ध नेता भी आचार्य भगवान देव जी सत्याग्रह को सफल बनाने के लिये जी जान से जुट गये। वे अन्तर्हित हो गये और इस अन्तर्हित अवस्था में उन्होंने हरियाणा के गांव का दौरा किया और लोगों को सत्याग्रह में जाने तथा उस के लिये धन देने के लिये प्रेरित किया। उन के प्रचार से सारे हरियाणा में सत्याग्रह के लिये उत्साह की असीम लहर दौड़ गई। इस का परिणाम स्वरूप उस छोटे से प्रदेश से 3-4 हज़ार सत्याग्रही जेलों में गये और वहाँ से धन भी पुष्कलमात्रा में एकत्र हुआ। सत्याग्रहियों को जेलों में अवर्णनीय कष्ट दिये गये। भोजन अच्छा न मिलना तो साधारण बात थी। उन्हें और भी अनेक प्रकार के कष्ट दिये गये। साधारण सी बातों पर उन्हें पीटा जाता था। फिरोजपुर की जेल में सत्याग्रहियों को जिस बुरी तरह पीटा गया था वह तो इस सत्याग्रह में सरकार द्वारा किये गये नृशंस कृत्यों में सब से अधिक नृशंस कृत्य था और सरकार के नाम पर कभी न मिटने वाला धब्बा था। उस जेल के अधिकारियों ने जेल के चोरी, डकैती और हत्या आदि के अपराधों में दण्ड-भोगी कैदियों द्वारा आर्यसत्याग्रहियों को जिन की संख्या उस जेल में 300-400 के लगभग थी, बहुत बुरी तरह पिटवाया था। जेल के अधिकारियों द्वारा उकसाये हुए ये पुराने अपराधी कैदी आर्यसत्याग्रहियों पर अचानक टूट पड़े थे। सभी सत्याग्रहियों को सख्त चोटें आई थीं। कितनों को बहुत भयंकर चोटें लगी थीं कइयों के आंख, हाथ और दूसरे अंग जीवन भर के लिये खराब हो गये। हरियाणा का वीर सत्याग्रही सुमेरसिंह तो इतना अधिक पीटा गया कि उस की उसी समय मृत्यु हो गई और वह अपने धर्म और अधिकारों की वेदी पर बलि हो गया। पठानकोट का वीर सत्याग्रही सत्यपाल भी इतना पीटा गया कि इन चोटों के कारण जेल से छूटने पर घर पहुँचते ही उस का भी प्राणान्त हो गया और इस प्रकार वह भी अपने अधिकरों की रक्षा के लिये बलिदान हो गया।

सत्याग्रहियों को दिये जा रहे इन कष्टों की कहानियों को सुनकर आर्य जनता का जोश और उमड़ पड़ता था।

thearyasamaj.org

जेल जाने के लिये सत्याग्रहियों के और दल के दल आने लगते थे। सत्याग्रह की इस तीव्र गति और उसव के लिये आर्यों और हिन्दुओं के निरन्तर बढ़ रहे उत्साह तथा बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिये उद्यत रहने की भावना को देखकर सरकार चिन्तित हो उठी। उसने कहना शुरु कर दिया कि श्री स्वामी आत्मानन्द जी और श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के पत्रों के उत्तर में सरकार जो कुछ कह चुकी है उस में हिन्दुओं की बहुत सी बातें मान ली गई हैं और शेष के लिये शान्ति से बातचीत हो सकती है, सत्याग्रह की कोई आवश्यकता नहीं है और उसे बन्द कर देना ही सब के हितों में है। नेहरू जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि आर्यों की 90 प्रतिशत मांगे मानी जा चुकी हैं शेष 10 प्रतिशत मांगे भी बातचीत से निपटाई जा सकती हैं, ऐसी स्थिति में सत्याग्रह की आवश्यकता नहीं रह जाती। भारत सरकार के गृहमंत्री पं. पन्त जी ने भी अपने भाषणों में तथा श्री गुप्त जी से बातचीत में आश्वासन दिया कि यदि सत्याग्रह बन्द कर दिया जाये तो हिन्दी रक्षा समिति की मांगों पर अत्यन्त सहानुभूति के साथ विचार किया जायेगा। अपनी सरकार को व्यर्थ में परेशान करना आर्यसमाज का कभी भी लक्ष्य नहीं था। नेहरू जी और पन्त जी के इन आश्वासनों से प्रभावित होकर श्री गुप्त जी ने रक्षा समिति से परामर्श करके 29 दिसम्बर 1957 को सत्याग्रह बन्द कर दिया। जिस समय सत्याग्रह बन्द किया गया उस समय तक 14-15 हज़ार सत्याग्रही जेलों में जा चुके थे। जिन सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह के लिये अपने आप को पेश किया परन्तु उन्हें कैद नहीं किया गया उन की संख्या को मिलाकर सत्याग्रहियों की संख्या लगभग 20-25 हज़ार तक पहुँच चुकी थी। और नये-नये सत्याग्रहियों के दल के दल आ रहे थे। इस सत्याग्रह के संचालन में आर्यसमाज ने लाखों रुपया व्यय किया। भिन्न-भिन्न प्रकार की यन्त्रणायें सहने के कारण इस सत्याग्रह के प्रसंग में लगभग 18 सत्याग्रहियों का प्राणान्त हुआ। इनमें से आठ-दस सत्याग्रही तो वे थे जिन का सत्याग्रह की सफल समाप्ति पर जेल से लौटते हुए अम्बाला के पास मोहरी स्टेशन पर रेल दुर्घटना में प्राणान्त हुआ था। अनेक सत्याग्रहियों पर भारी जुर्माने भी हुए थे और इन जुर्मानों को वसूल करने के लिये उनकी जमीन-जायदाद और दूसरी सम्पत्ति कुड़क कर ली गई थी। यह दण्ड अधिकांश में हरियाणा के सत्याग्रहियों को दिया गया था। इतना भारी बलिदान आर्यसमाज ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिये इस सत्याग्रह में दिया था।

आर्यसमाज के आत्मत्याग और बलिदानों की परम्परा के इतिहास में उस के द्वारा किया गया पंजाब का यह हिन्दी सत्याग्रह भी उसके बलिदानों की अमर कहानी रहेगा।

प्रगति की ओर

आर्यसमाज में यह जो आत्मत्याग और बलिदान की भावना है, आर्यसमाज इस प्रकार भारी से भारी त्याग करके जो लोक-सेवा का कार्य करता रहता है, उससे वह जनता में सर्वप्रिय हो गया है। आर्यसमाज स्थापना-काल से लेकर अब तक प्रति दसवें वर्ष में आर्यसमाजियों की संख्या दुगनी हो जाती रही है। 1931 की जनसंख्या (जनगणना) में आर्यसमाजियों की संख्या 990233 थी। 1940 की गणना में आर्यों की संख्या पिछली गणना से चोगुनी हो गई थी। इस समय भारतवर्ष में सगठित आर्यसमाजों की संख्या 3000 के लगभग है। इसके अतिरिक्त बरमा, अफ्रीका, बगदाद, फिजी आदि देशों में भी दर्जनों आर्यसमाजें हैं। 87 साल के थोड़े से समय में आर्यसमाज की उन्नति बड़ी सन्तोषप्रद है। इससे आर्यसमाज की भारी लोकप्रियता सूचित होती है। इस जन-प्रियता का कारण आर्य समाज की लोक-सेवा और उसके आत्म-बलिदान है। यदि आर्यसमाज इसी प्रकार लोक-सेवा और आत्म-बलिदान के धर्मयुक्त मार्ग पर चलता रहा तो वह निःसंशय एक दिन सारे विश्व को वैदिक धर्म की दीक्षा के अपने स्वप्न को चरितार्थ करने में सफल होगा। प्रभु करे वह अपने मार्ग पर अक्षुण चलता रहे।

आर्य वीर विजय के जिन मान्य सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है उनसे प्रार्थना कि वह खाता न. 039010100010766 AXIS BANK में जमा कराकर रसीद की फोटो कापी भेज दें और पूरा पता लिखें।

thearyasamaj.org

"झज्जर के इन बच्चों ने सम्पूर्ण योग सूत्र कण्ठस्थ करके कमाल कर दिया" – योग ऋषि स्वामी रामदेव जी

जिला झज्जर के विभिन्न स्कूलों में पढ़ने वाले उपरोक्त 20 बच्चों (13 छात्राओं एवं 7 छात्रों) नेयोगदर्शनम् के सम्पूर्ण 195 योग सूत्रों को याद करके विश्व में एक अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया है।

जिला झज्जर के विभिन्नस्कूलों में पढ़ने वाले भारत स्वाभिमान झज्जर के सह-संयोजक श्री रामनिवास योगार्थी की देखरेख में प्रशिक्षित विद्यार्थियों को पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में 3 जून 2014 कोयोग ऋषि स्वामी रामदेव जी ने सम्मानित किया।

विद्यार्थियों के नाम इस प्रकार हैं :- कनिका, सोनम, अनमोल, काजल, पारुल, नन्दिनी, श्रुति, आरती, शशांक, प्रिया, अक्षांस, हर्ष, रेखा, दिक्षा, लक्ष्य, अभिषेक, काजल, कोमल, मिनल, मधुसूदन।

– मंत्री, आर्य समाज
झज्जर

आत्म रक्षा एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल, रोहतक मंडल के तत्वावधान में युवतियों के लिये आत्म रक्षा एवं चरित्र निर्माण शिविर दि. 23 जून, 2014 से 29 जून 2014 तक वैदिक भक्ति साधनाश्रम आर्य नगर, रोहतक में आयोजित किया गया जिसमें रोहतक नगर एवं हरियाणा के फरीदाबाद, नरवाना, भिवानी, सोनीपत, हिसार आदि मुख्य नगरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों से 92 युवतियों ने संध्या हवन, वैदिक संस्कृति की रक्षा, योगासन, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, नियुद्धम, जम्प रोप आदि का प्रशिक्षण लिया। शारीरिक प्रशिक्षण तलवार लाठी आदि संचालन का प्रशिक्षण कु. दीपशिखा गुरुकुल

thearyasamaj.org

आर्य वीर दल रोहतक मंडल के तत्वावधान में आयोज़ित युवतियों के प्रशिक्षण शिविर के दि. 29.6.2014 को समापन समारोह में लाठी प्रशिक्षण शिविर का एक दृश्य जिस में एक वीरांगना सैनिक नमस्ते कर रही है।

चोटीपुरा (उ.प्र.) कु. कीर्ति, कु. सिमरण, कु. निकता आदि ने दिया। शिविर की अध्यक्षा श्रीमती सावित्री शास्त्री, संयोजिका श्रीमती दयावती तथा उनके साथ सहयोग के लिये श्रीमती प्रमोद आर्या, श्रीमती कृष्णा सचदेवा, श्रीमती सरोज आर्या , श्रीमती पुष्पा अरोड़ा आदि दिन रात युवतियों के साथ रह कर युवतियों के आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण में उनका संरक्षण करती रहीं। दिन में 10 से 12 बजे तक तथा अपराहन् 3 से 5 बजे तक उन्हें आर्यवीरांगना दल के मुख्य उद्देश्य वैदिक संस्कृति, अध्यात्म शिक्षा तथा बौद्धिक शिक्षा के लिये श्री पं. भरत लाल जी शास्त्री, आ. नरेन्द्र मैत्रेय जी, डा. सुरेन्द्र कमुमार जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, ओमप्रकाश आर्य, देशराज आर्य, बसंत कुमार सहगल आदि ने भी युवतियों को उक्त विषयों पर सम्बोधित किया। शिविर का प्रारम्भ देव यज्ञ (हवन) एवं ध्वजारोहण से हुआ जिसमें आर्य वीरांगनाओं के अतिरिक्त उनके अभिभावकों ने भी भाग लिया। गत वर्ष की भान्ति आर्य वीरांगनाओं के अतिरिक्त आर्य नर-नारियों एवं आर्यवीरों ने शनिवार दि. 28.6.2014 को सायं 5.30 बजे से 7.30 बजे तक नगर कीर्तन में प्रशिक्षण ले रही युवतियों ने प्रदर्शन किया तथा भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बलात्कार, मद्यपान, मांसाहार आदि के विरोध में पटिकायें हाथ में लेकर नारे लगाये। रविवार दि. 29.6.14 को समापन समारोह में आ. लक्ष्मी भारती जी गुरुकुल संजूमा (कैथल) श्री

आर्य वीरांगनाओं का एक शिविर वैदिक भक्तिसाधनाश्रम में दि. 23.6.14 से 29.6.14 तक आयोजित चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर में सर्वश्रेष्ठ बालिका कु. प्रिया सुपुत्री श्री रामपाल गांव सामायण तहसील महम, जिला रोहतक को पुरस्कृत करते श्री देशराज आर्य मंडल पति ब्र. सत्यकाम जी, श्री ओमप्रकाश जी, श्री वेदप्रकाश जी, महामंत्री हरि. , श्रीमती सावित्री शास्त्री, दयावती जी तथा सरोज कुमारी जी।

thearyasamaj.org

वेदप्रकाश आर्य महामंत्री आर्यवीर दल हरियाणा तथा स्वा. ब्रह्मानन्द जी के प्रभावशाली उदबोधन दिये। विभिन्न मदों में पुरस्कार विजेता युवतियों को आ. लक्ष्मी भारती, श्रीमती मंजू सचदेवा, दयावती, सावित्री शास्त्री, स्नेहलता, सरोज आर्या, इन्द्रपाल गुगनानी, सुमन, ओम्प्रकाश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, जगदीश आर्य, रणवीर बल्हारा, कर्ण सिंह मोर आदि ने पुरस्कार एवं साहित्य का वितरण किया। ध्वजगान, ध्वजावतरण शान्तिपाठ के साथ समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल रोहतक मंडल के तत्वावधान में युवाओं के लिये चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर दि. 2.6.2014 से 8.6.2014 तक बलिदान

समापन समारोह में सूर्य नमस्कार का प्रदर्शन करते आर्यवीरों का चित्र

भवन एवं चौ. लखीराम आर्य अनाथालय दयानन्द मठ रोहतक में आयोजित किया गया जिसका उद्धाटन यज्ञोपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री मा. रामपाल आर्य एवं सार्वदेशिक आर्य वीरदल के महामन्त्री श्री वेद प्रकाश आर्य द्वारा दि. 2 जून 2014 को सायं 6.30 बजे ध्वजारोहण के साथ हुआ। आर्य वीर दल रोहतक मंडल के मण्डलपति श्री देशराज आर्य, मंत्री श्री ओम्प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री मुलखराज आर्य आदि आर्य वीर दल रोहतक के अधिकारी एवं अन्य गणमान्य आर्य बंधु उपस्थित थे।

एक सप्ताह के इस शिविर में हरियाणा के विभिन्न गांवों व नगरों से आये 109 युवाओं ने नियुद्धम, योगासन, लाठी संचालन, सर्वांगसुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, दण्ड बैठक तथा जंपरोप आदि का प्रशिक्षण सर्वश्री सतीश आर्य, महावीर आर्य, सत्येन्द्र आर्य तथा विकास आर्य द्वारा दिया गया। बौद्धिक प्रशिक्षण सर्वश्री उमेद सिंह शर्मा संचालक आर्य वीर दल हरियाणा, डा. धर्मपाल देशवाल, पं. भरतलाल शास्त्री, डा. बलवीर सिंह आर्य, डा. जगदेव सिंह जी, पं. सत्यवीर शास्त्री जी तथा धर्म देव आर्य ने दिया। शिविर के समापन समारोह में आर्य वीरों को यज्ञोपवीत धारण करवा कर उन्हें आर्यसमाज एवं आर्यवीर दल के साथ जुड़े रहकर आर्य संस्कृति की रक्षा करने, शक्ति संचय एवं देश तथा समाज की सेवा करने का संकल्प कराया। इस समारोह के मुख्यवक्ता डा. सुरेन्द्र कुमार जी, वेद प्रकाश आर्य तथा स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने पुनः वैदिक संस्कृति की रक्षा करने, पाखंडों का उखाड़ फैंकने तथा देश के स्वाभिमान को पुनः जीवित करने के लिये प्रेरित किया। समापन समारोह के संयोजक श्री

समापन समारोह में स्तूप निर्माण का एक दृश्य

ओम्प्रकाश आर्य तथा मंडलपति देशराज आर्य ने सभी समाजों के अधिकारियों का तथा युवकों के अभिभावकों का हृदय से आभार प्रकट किया। सभी मदों में विजेताओं एवं प्रतिभागी आर्य वीरों को पुरस्कार एवं साहित्य प्रदान करके सम्मानित किया गया। ध्वजावतरण एवं शान्ति पाठ के साथ युवाओं को विदा किया गया।

- देशराज आर्य, मंडलपति

thearyasamaj.org

आर्य वीर विजय (मासिक) 25 अगस्त, 2014

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्

श्रीमान्/श्रीमती

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37- E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'तप मिनी ऑफसैट प्रिंटर्स', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।